पुष्पांजलि

स्वामित्व योजना

राष्ट्रीय जल
परियोजना

भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, हैदराबाद

पुष्पांजलि
2021

भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, उप्पल, हैदराबाद-500039

पुष्पांजलि
वार्षिक अंक : 2021

संरक्षक

बी. सी. परीडा निदेशक

संपादकीय समिति

देव कुमार उरांव अधिकारी सर्वेक्षक

के. प्रसन्नालक्ष्मी हिन्दी अनुवादक

मुख पृष्ठ सृजन

प्रमोद एम पराते अधिकारी सर्वेक्षक

आंतरिक सज्जा, कंप्यूटर सेटिंग व मुद्रण कार्य

भूपेन्द्र सी. परमार सर्वेक्षक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। संपादक मंडल अथवा भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बिक्री के लिए नहीं।
केवल आंतरिक परिचालन के लिए

नवीन तोमर
Naveen Tomar
भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबडकला एस्टेट, पोस्ट बाक्स न॰ 37
देहरादून-248 001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No.37
Dehradun-248 001, (Uttarakhand), India.

संदेश

यह गौरव एवं प्रसन्नता की बात है कि भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय, हैदराबाद द्वारा राजभाषा गृह-पत्रिका "पुष्पांजलि-2021" का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हमें संविधान का सम्मान करना चाहिए तथा अपने काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।

हिंदी गृह-पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अभिव्यक्तियों व उनके हिंदी उपयोग को दूसरों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं जिससे हिंदी के प्रति लगाव व उपयोग करने की प्रेरणा मिलती है। हिंदी को आत्मीय भाव से अपनाने में राष्ट्र प्रेम का भाव जागृत होता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में किए जा रहे अनेक प्रयासों में हिंदी गृह-पत्रिकाएं अहम भूमिका निभाती हैं।

आशा है कि भविष्य में भी इस तरह के प्रयास जारी रहेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन में सहयोगी सभी रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

नवीन तोमर

(नवीन तोमर)
भारत के महासर्वेक्षक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

फोन / Phone: 27201181(EPABX). 27200430
टेलि-फैक्स/ tele-Fax: 27200430
ई-मेल/ E-mail: gisrs.soi@gov.in

भौगोलिक सुचना पद्वती और सुदूर संवेदन निदेशालय
GIS & REMOTE SENSING DIRECTORATE
उप्पल, हैदराबाद -500 039 (तेलंगाणा)
UPPAL, HYDERABAD - 500 039 (Telangana)

निदेशक की कलम से.....

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर हमारी राजभाषा की गृह-पत्रिका के वार्षिक अंक "पुष्पांजलि-2021" को आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिंदी को विकसित करना तथा सरकारी कामकाज में इसका अधिकाधिक प्रयोग करना हमारा राष्ट्रीय, प्रशासनिक एवं नैतिक कर्त्तव्य है। इस दिशा में हमारी "पुष्पांजलि पत्रिका", राजभाषा के उत्थान में सदैव अपना योगदान देती आ रही है।

इस संबंध में यहाँ उल्लेख करना समुचित होगा कि हमारी पत्रिका इस कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों की अनुभूति एवं अनुभवों को प्रतिबिंबित करने का मुख्य माध्यम है। हमारे कर्मचारी/अधिकारी गण विभिन्न योजनाओं जैसे "स्वामित्व योजना", "एन.एच.पी.परियोजना" आदि के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सक्रिय भूमिका निभाते हुए राष्ट्र के निर्माण में बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका आपको, न केवल कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करेगी अपितु रचनाकारों के राजभाषा संवर्धन हेतु किए जा रहे प्रयासों की झलक भी इसमें देखने को मिलेगी।

इस पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों, रचनाकारों, सहयोगियों तथा संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(बी.सी.परीडा)
निदेशक

संपादकीय

भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय, हैदराबाद की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "पुष्पांजलि" आपके कोमल नयनों के समक्ष है। नहीं पता यह आपके समक्ष किस रूप में है; कागजी अर्थात् मुद्रित प्रति के रूप में या इलेक्ट्रानिक्स प्रति के रूप में। सामयिक कालान्तर के परिपेक्ष में भारत सरकार द्वारा सुझावों और उनके अनुपालन के कारण आजकल इलेक्ट्रानिक्स संचार माध्यम का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। विगत दो वर्षों में कोरोना महामारी के कारण हर क्षेत्र में इलेक्ट्रानिक्स संचार माध्यम के द्वारा क्रिया-कलापों के उपयोग में बेतहासा वृद्धि हुई है। हमारी गृह-पत्रिका "पुष्पांजलि" ने भी इस पद्धति को सहर्ष स्वीकारा है। गत वर्ष से यह पत्रिका इलेक्ट्रानिक्स प्रति के रूप में भारतीय सर्वेक्षण विभाग के हर कार्यालय तक पहुँची है। इसकी पहुँच कार्यालय के प्रत्येक अधिकारियों एवं कर्मचारियों तक हो, ऐसा प्रार्थनीय है। यदि ऐसी पहल की जाय, तो यह हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं विभाग के द्वारा किये गए कार्यों एवं श्रेष्ठतम उपलब्धियों की जानकारी संजोये हर जन-मानस तक आसानी से पहुँच सकती है। मुद्रित प्रति में एक बाध्यता है सीमित प्रतियों के मुद्रण की, इलेक्ट्रानिक्स प्रति के चलन में आ जाने से इसका क्षेत्र असीमित हो गया है।

इस निदेशालय का सौभाग्य रहा है कि "पुष्पांजलि" का प्रकाशन प्रतिवर्ष अनवरत, निरंतर होता रहा है। निदेशकों का स्नेह, प्रेम और प्रोत्साहन इस पत्रिका को सदैव मिलता रहा है।

मुझे अत्यंत हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है कि "पुष्पांजलि", हमारे निदेशालय की चहेती पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन में मैं छोटा सा योगदान दे रहा हूँ।

मैं उन सभी लेखकों, रचनाकारों, कार्मिकों एवं उनके पारिवारिक सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने रंग-बिरंगी पुष्प रूपी रचनाओं एवं लेखों का अर्पण कर इस पत्रिका को मूर्त रूप देने में अपना सहयोग दिया है।

यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार स्नेह और प्रोत्साहन पाकर और नये रूप में निखर कर निरंतर प्रकाशित व प्रसारित होती रहे ।

दे. कु. उराँव

(देव कुमार उराँव)
अधिकारी सर्वेक्षक

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	लेख / रचना	लेखक / रचनाकार सर्वश्री / श्रीमती	पृष्ठ संख्या
1.	अविस्मरणीय संस्मरण	देव कुमार उराँव	1
2.	पेड़	डी.नागतेजा	8
3.	तुलसीदास के राम	नरबहादुर	9
4.	पदोन्नत अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची	कार्यालय	12
5.	स्थानांतरित अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची	कार्यालय	12
6.	स्थानांतरण पर तैनात अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची	कार्यालय	13
7.	सेवा निवृत अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची	कार्यालय	13
8.	नियुक्ति	कार्यालय	13
9.	वर्ष 2020-2021 के लिए मानदेय से पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	कार्यालय	14
10.	मधुर स्मृतियाँ	कार्यालय	15
11.	करें शक्ति का आवाहन	के.पूर्णिमा	18
12.	विकार मंजिल (भग्न हृदयों का भूतिया महल)	के.प्रसन्ना लक्ष्मी	19
13.	समय ईश्वर है	कुमारी जे.हिमवर्षा	22
14.	श्वान-सापेक्ष संस्कृति	भूपेन्द्र सी परमार	23
15.	दीपक बनकर.....	मुकुल क्षेत्री	25
16.	कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाले कुछ लैटिन शब्दों के हिन्दी समानार्थ	जी.प्रेम कुमार	26
17.	जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान !	पी.के.प्रतिभा	28
18.	भारत की लिपि : देवनागरी	विभिन्न स्रोतों से साभार	29
19.	कोविड-कुछ सकारात्मक विचार	अरुणकुमार टी.एस.	32
20.	जनसंख्या नियंत्रण क्यों जरूरी	गौरव पटेल	34
21.	स्वतंत्रता दिवस से जुड़े रोचक हिस्से	बिजल तेवर	36
22.	जरा महसूस कर लेना कभी.....	प्रमोद एम पराते	39
23.	अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रतिभा संपन्न बच्चों की उपलब्धियां	कार्यालय	40

अविस्मरणीय संस्मरण

---श्री देव कुमार उराँव
अधिकारी सर्वेक्षक

कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं, जो कभी भुलाई नहीं जा सकती। यह स्मृतियों के ऐसे कोने में पैठ कर जाती है जहां से इसे निकाला ही नहीं जा सकता। महीने, साल और यहां तक कि उम्र बीत जाती है परन्तु यह सदा उसके साथ रहती है। और जब भी उसका या उस संदर्भ का जिक्र होता है या उनसे मिलती-जुलती कोई बात या घटना होती है, स्वतः वह घटना चलचित्र की तरह मन-मस्तिष्क में घूमने लगती है। यूँ तो बहुत सी स्मृतियों के साथ जीता है हर व्यक्ति परन्तु किसी विशेष को ही कलमबद्ध कर पाता है। ऐसी ही एक घटना का उल्लेख मैं अपने निदेशालय की गृह-पत्रिक पुष्पांजलि में करने का प्रयत्न कर रहा हूँ और इसे मैं अपने मित्र आदरणीय श्री मोहित लाल मण्डल, अधिकारी सर्वेक्षक (सेवा निवृत्त) को समर्पित करता हूँ।

बात 80 के दशक की है। मैं वर्ष 1981 में आई.एससी(इन्टर मीडिएट इन सांइस) में उत्तीर्ण हुआ था और विज्ञान स्नातक की पढ़ाई राँची में मरवाड़ी महाविद्यालय राँची में कर रहा था। मैंने मैट्रिक तक पढ़ाई अपने गृह-नगर बिहार के कटिहार जिले से पूरी की थी। इंटरमीडियट की परीक्षा पास करते ही मैंने अपना निबंधन कटिहार जिला के जिला रोजगार कार्यालय (Employment exchange) में करा लिया था और उसमें वर्तमान पता राँची का दे रखा था। वर्ष 1982 में स्नातक के एक वर्ष पूरे होने के दौरान ही मेरा चयन बिहार पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विद्यालय, पटना में हो गया। मैंने स्नातक का अध्ययन छोड़ बिहार पशुचिकित्सालय एवं पशुपालन विद्यालय, पटना में नामांकन करा लिया। यह चार वर्षीय कोर्स, ट्रेमिस्टर प्रणाली में चलता था। मैंने एक ट्रेमिस्टर की पढ़ाई की परीक्षा पास की और अध्ययन छोड़ दिया, क्योंकि मुझे घर से इस पढ़ाई को जारी रखने के लिए सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा था। यहां की पढ़ाई छोड़ मैं पूर्णियाँ जिले के पूर्णियां महाविद्यालय के कला संकाय में स्नातक में नामांकन करा अध्ययन प्रारम्भ कर चुका था और पूर्णियां में रहने लगा। एक वर्ष होने को थे यहां, वर्ष 1983, दिसम्बर का महीना था। एक दिन मुझे किसी परिचित से खबर मिली कि बाढ़ नियंत्रण कार्यालय के एक कार्यपालक अभियंता ने मुझे बुलाया है। उनका कार्यालय और आवास मैं जहां रहता था उससे ज्यादा दूर नहीं था। अगले दिन मैं उनसे मिलने चला गया, हां उनके बारे में थोड़ी जानकारी थी। उन्होंने मुझे एक पत्र दिया जो मेरे नाम था; और वह था भारतीय सर्वेक्षण विभाग के दक्षिण पूर्वी सर्किल कार्यालय द्वारा प्रेषित

टी.टी.टी."ए." की परीक्षा में उपस्थित होने हेतु बुलावा पत्र/ प्रवेश पत्र।

परीक्षा की तिथि थी 31-12-1983 और परीक्षा केन्द्र रेलवे विद्यालय, कटिहार। उस समय मैं भारतीय सर्वेक्षण विभाग के बारे में नहीं जानता था और टी.टी.टी."ए". एक विचित्र सा पदनाम होने के कारण अजीब सी उलझन थी कि यह कौन सा पद है और इसमें किस प्रकार के कार्य होते हैं। परन्तु मेरी सभी संकाओं का निदान अभियंता महोदय ने बड़े ही सहज तरीके से कर दिया। बाढ़ नियंत्रण विभाग से जुड़े होने के कारण भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रकाशित मानचित्रों का बहुत उपयोग करते थे, अतः उन्हें भारतीय सर्वेक्षण विभाग के विषय में जानकारी थी। उन्होंने हमें हिम्मत दी और प्रोत्साहित किया कि यह विभाग बहुत ही प्रतिष्ठित और विख्यात है और देश की सेवा में समर्पित है।

प्रवेश पत्र/बुलावा पत्र का उनके हाथ लगना भी एक संयोग था। अभियंता महोदय का घर गुमला या लोहरदगा जिले में कहीं था, और उनकी तैनाती पूर्णियां जिले में थी। वे उन दिनों छुट्टी में घर गए थे और घर से वापस आने के क्रम में वे उस छात्रावास से होकर आए जिस छात्रावास को मैं एक-डेढ़ वर्ष पहले छोड़ चुका था।चूँकि मैंने कटिहार जिला रोजगार कार्यालय में वर्तमान पता में राँची स्थित उस छात्रावास का पता दिया था, मेरा प्रवेश/बुलावा पत्र उसी पते पर कई दिनों तक पड़ा था। छात्रावास के संचालक और अभियंता महोदय की अच्छी जान-पहचान थी और मेरे बारे में भी संचालक को पता था कि मैं उस समय कहां रह रहा था। अतः वह प्रवेश / बुलावा पत्र छात्रावास संचालक और अभियंता महोदय के माध्यम से मेरे पास उचित समय पर पहुँच गया।

खैर 31-12-1983 का दिन आया, मैं टी.टी.टी.'ए' के लिए आयोजित परीक्षा में उपस्थित हुआ। परीक्षा दो पाली में थी। परीक्षा के बाद भी हमें रुकने का आदेश हुआ। हम रुके और फिर हमें देर शाम आदेश प्राप्त हुआ कि हमें अगले दिन अर्थात् 01-01-1984 को साक्षात्कार के लिए उसी केन्द्र में उपस्थित होना है। परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर खुशी हुई औरों की तरह और रात भर बेचैनी रही कि अगले दिन साक्षात्कार में क्या पूछा जाएगा। अगले दिन वर्ष 1984 का पहला दिन था-नव वर्ष 1984. मैं तैयार होकर साक्षात्कार हेतु निकला। गांव से चार कि.मी. पैदल चलकर बस पकड़ना था, बीच में कटिहार से पूर्णिया की ओर जानेवाली रेल लाइन पड़ती है। यह रेल लाइन पूर्णियां से दो दिशाओं में जाने के लिए बँट जाती है। एक सहर्सा के लिए और एक जोगबनी के लिए। जोगबनी स्टेशन बिहार का और भारत का एक अंतिम रेल्वे स्टेशन है जहां से नेपाल की सीमा लगती है और नेपाल के विराट नगर शहर को जाया जा सकता है। रेलवे वर्ष में तीन दिन अर्थात् नव वर्ष, गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस को बिना टिकट रेल यात्रा की सुविधा देती थी। जब मैं उस रेलवे लाइन के निकट पहुँचा तो

कटिहार से जोगबनी जाने वाली रेल गाड़ी गुजर रही थी। रेलगाड़ी में लोग खचाखच भरे थे। यही नहीं लोग छतों पर और डब्बों को जोड़ने वाली लोह पाइपों पर भी बैठकर यात्रा कर रहे थे। उसे जब याद करता हूँ तो चलचित्र में दिखाये गए भारत विभाजन के समय रेलों पर लदे लोगों का दृश्य याद आ जाता है। खैर जब रेलगाड़ी गुजर रही थी सब के चेहरे पर अजीब सी खुशी थी और सब निकट से गुजरते लोगों को हाथ हिला कर नव वर्ष की शुभकामनाएँ दे रहे थे। वास्तव में उस समय लोग भारत से नेपाल जाकर, नेपाल से टेरलीन, टेरीकोट, गेवेडीन आदि कपड़े और विभिन्न प्रकार की विदेशी चीजें खरीद लाते थे जो भारतीय बाजार भाव की तुलना में बेहद सस्ती पड़ती थी। लोग, खास कर युवा वर्ग इस दिन की प्रतीक्षा करते, सुबह की रेलगाड़ी से नेपाल जाते खरीद दारी करते और शाम की रेलगाड़ी से वापस आ जाते, वो भी बिना यात्रा टिकट । मैंने भी गुजरते हुए और हाथ हिलाकर नव वर्ष की शुभ कामानाएँ देते लोगों का हाथ हिलाकर नववर्ष की शुभकामनाएँ दी। उन लोगों की शुभकामनाएँ पाकर मुझे आभास होने लगा था जैसे वे लोग मुझे नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ-साथ रोजगार पाने हेतु साक्षात्कार में सफलता की शुभकामनाएँ दे रहे थे।

मैं समय पर निश्चित केन्द्र पर साक्षात्कार हेतु पहुँचा, सफलतापूर्वक साक्षात्कार दिया और उत्तीर्ण भी घोषित किया गया। मेरे अलावा एक और व्यक्ति को भी उत्तीर्ण घोषित किया गया और वे थे श्री मोहित लाल मण्डल जी। अपराह्न तक हम दोनों को कुछ फार्म देकर निर्देश दिया गया कि हम दोनों दिनांक 06-01-1984 को भारतीय सर्वेक्षण विभाग के दक्षिण पूर्व कार्यालय, भुवनेश्वर में कार्यग्रहण(ज्वाइनिंग)रिपोर्ट दें। हमें यह भी बताया गया कि भुवनेश्वर में योगदान के पश्चात् हमें हैदराबाद भेज दिया जाएगा दो वर्ष के प्रशिक्षण के लिए। हमारे पास सिर्फ चार दिन थे। विभाग द्वारा दिए गए फार्म में एक चिकित्सा से सम्बन्धित फार्म था, जिसे सिविल सर्जन से हस्ताक्षरित कराना था। अगले दिन हम सिविल सर्जन के कार्यालय में मिले। चिकित्सक से जांच कराकर प्रमाण-पत्र लेना इतना सरल नहीं था। दो-तीन चिकित्सकों को सम्पर्क कर उनसे मिन्नतें की, जांच हुई और अन्ततः सिविल सर्जन द्वारा भी प्रमाणित फार्म प्राप्त कर लिया गया, उसमें दो दिन निकल चुके थे। दूसरी ओर घर पर पिताजी को उतनी दूर भेजने की व्यवस्था हेतु पैसे और कई अन्य व्यवस्था भी करनी थी। किसी प्रकार आधी-अधूरी व्यवस्था करके मैंने घरवालों से आशीर्वाद और विदाई ली। शाम को एक रेलगाड़ी हावड़ा के लिए प्रस्थान करती थी। समय से पूर्व हम स्टेशन पहुँच गए, टिकट ली और गाड़ी में चढ़ गए। चूँकि ट्रेन वहीं से खुलती थी अतः हमें बैठने के लिए जगह मिल गई। मैंने इससे पहले रेल और सड़क मार्ग से कभी किसी के साथ और कभी अकेला रांची, टाटानगर, पटना और कलकत्ता (कोलकाता) का सफर कर चुका था। अतः मुझे घर से ही विदाई मिल गई थी, परन्तु मण्डल जी के

साथ ऐसा नहीं था, वे कभी इतनी दूर का सफर न तो रेल से, ना ही बस से किए थे, सो उन्हें छोड़ने उनके बड़े भाई साहब आये थे। बड़े भाई साहब ने मुझे अकेले में बताया कि उनके भाई अर्थात् मोहित लाल मण्डल जी कभी इतनी दूर की यात्रा नहीं किये हैं और वे बहुत सीधे-साधे, भोले-भाले हैं, और शीघ्र ही किसी की भी बातों में आ जाते हैं। उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं उन्हें सुरक्षित अपने साथ लेकर गन्तव्य तक पहुँचुं। हम दोनों के पास एक-एक फाइल थी जिसमें हमारे नौकरी से सम्बन्धित प्रपत्र और अध्ययन समन्धित प्रमाण-पत्र थे और एक-एक गठरी, जिसमें एक दरी, एक कम्बल, एक चादर और पहनने के कुछ कपड़े थे। रेल-गाड़ी समय पर चली, भाई साहब के पैर छूकर हम दोनों ने विदाई ली। अब शुरू होती है असली कहानी। हमारे पास टिकट के अलावा कुछ तीन-चार सौ रुपये रहे होंगे। उन दिनों इतने पैसे भी काफी थे और इनकी हिफाजत करना भी चिंता का विषय था, खासकर यात्रा करने वाले व्यक्ति के लिए। हम लोग द्वितीय श्रेणी के डब्बे में बैठकर यात्रा कर रहे थे, जहां जेबकतरों से डर था, साथ में बैठे यात्री से डर था कि कहीं कोई चीज सुंघा कर बेहोश न कर दे और पैसे और सामान न ले जाय। क्योंकि इस प्रकार के हादसों की कहानी अक्सर सुना करते थे। रेल गाड़ी ने जैसे-जैसे गति पकड़ी मण्डल जी खुलते चले गए। बगल में बैठे यात्रियों को अपना परिचय दिया और बताने लगे कि हमारी नौकरी लग गई है, हम हावड़ा-कलकत्ता होते हुए भुवनेश्वर जाएँगे, फिर वहां से हैदराबाद जाएँगे, उनकी शादी हो गई है, दो प्यारे-प्यारे बच्चे हैं आदि-आदि। मुझे डर लग रहा था कि वे ये न बता दें कि कितने पैसे किस-किस कमीज या पैंट की थैली में रखे हैं। मण्डल जी से परिचय को बस दो-तीन दिन ही हुए थे, ऐसे में उन्हें जानना आसान नहीं था। उनका इस प्रकार अपरिचितों से बातचीत करना और उनकी भाव-भंगिमाएँ मुझे अंदर-अंदर परेशान कर रही थीं। खैर हम दोनों ने घर से रात के भोजन के लिए रोटियां ले रखी थीं, सो रात का खाना खाया। कुछ देर के बाद कुछ लोग बैठे-बैठे ही आँखें मुंदे नींद ले रहे थे, उनमें मण्डल जी भी थे, पर मुझे नींद कहां । मुझे तो डर लग रहा था कि कोई हमारे पैसे न चुरा ले, गठरी न चुरा ले। बस इसी प्रकार रात बीती और हम हावड़ा पहुँच गए। संतोष हुआ कि हम सामान के साथ सुरक्षित हावड़ा पहुँच गए।

हावड़ा स्टेशन से लगभग 10 कि.मी. की दूरी पर एक स्टेशन है, लिलुवा। वहां मेरे मौसेरे भाई का घर है, हम दोनों उनके यहां अचानक आ धमके । हमें अचानक देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। चूँकि हावड़ा से भुवनेश्वर जाने वाली ट्रेन रात के दस बजे थी, हम वहां खा-पीकर थोड़ा आराम कर लिए। शाम को तैयार होकर हम हावड़ा से भुवनेश्वर जानेवाली पुरी एक्सप्रेस पकड़ने हेतु हावड़ा के प्लेटफार्म में समय से पहले पहुँच गए। गाड़ी आने की सूचना मिलते ही उस प्लेटफार्म पर भयंकर भीड़ जमा हो गई। भीड़ को देखकर मैंने मण्डल

जी का सामान भी अपने कब्जे में ले लिया और मण्डल जी को मेरे पीछे-पीछे ट्रेन के डब्बे में घुस जाने को कहा। ट्रेन आई, प्लेटफार्म पर लगी, भीड़ के साथ मैं अपना और मण्डल जी का सामान लेकर डब्बे में घुस कर दो जगह छेक(घेर) ली-- एक में मैं बैठा और दूसरे पर सामान रख दिया मण्डल जी के लिए। कुछ ही मिनट में पूरा डब्बा खचाखच भर गया, पर मण्डल जी कहां !, उस स्थिति में न मैं सामान छोड़कर मण्डल जी को खोजने जा सकता था न हीं ट्रेन को छोड़ सकता था, क्योंकि हर हाल में हमें अगले दिन भुवनेश्वर पहुँचना था। जब भीड़ थोड़ी स्थिर हो गई मैंने खिड़की के निकट जाकर इधर-उधर देखा और आवाज लगाई--"मण्डल जी, मण्डल जी;" परन्तु दुर्भाग्य, मण्डल जी न तो दिखे न हीं उन्हें मेरी आवाज सुनाई दी। समय पर रेलगाड़ी रवाना हो गई, पर मण्डल जी का कोई पता न था। अब मुझे रोना आ रहा था, तरह-तरह के विचार आ रहे थे। मण्डल जी कहां छूट गए । और मजे की बात यह कि मण्डल जी का रेलवे का टिकट भी मेरे पास ही था। मण्डल जी के बड़े भाई साहब ने उनकी जिम्मेदारी मुझे दी थी और मैं मण्डल जी से बिछड़ चुका था। हावड़ा से खुलने के बाद ट्रेन अगले स्टेशन खड़गपूर पर रुकी। मैंने खिड़की से झांक कर देखा कि मण्डल जी कहीं नजर आ जाएँ। आवाज दी--" मण्डल जी, मण्डल जी," परन्तु न मण्डल जी नजर आए न ही उनकी कोई आवाज। रेलगाड़ी चल पड़ी, अगले स्टेशन पर रुकी और फिर चल दी। हर-एक स्टेशन पर ट्रेन के रुकने पर मैं खिड़की से झांकता और चिल्लाता--" मण्डलजी, मण्डल जी..."। डबडबाई आँखें और रुँधा गला। चिल्ला-चिल्ला कर मेरा गला भी खराब हो चुका था। भोर-भोर को जब ट्रेन कटक स्टेशन पर रुकी, मैं हमेशा की तरह खिड़की से बाहर झांका। प्लेटफार्म पर एक चाय की स्टाल पर मण्डलजी चाय की चुस्कियाँ लेते नजर आए। मैंने आवाज दी "मण्डल जी...!", मण्डल जी मेरी ओर देखे, चाय खत्म की और खिड़की के निकट आए। मैंने कहा-"मण्डलजी, मैं रात भर आपको आवाज लगाता रहा, प्रतीक्षा करता रहा और आप कहां छूट गए, आपने एक बार भी अपने सामान और मेरी सुध न ली "। एक तरफ तो बहुत गुस्सा आया दूसरी तरफ संतोष कि वे ट्रेन में चढ़ चुके थे और सफर कर रहे थे। मण्डल जी का मासूमियत भरा जवाब मिला-"मैं पीछे के डब्बे में चढ़ गया, वहां जगह मिल गई थी, मैं आराम से था।", मैंने कहा-" अब तो आ जाइए" । पर मण्डल जी जिस डब्बे से आए थे वापस उसी डब्बे में चले गए। मन बहुत व्यथित हुआ--अजीब सा व्यक्ति है, न उसे अपने सामान जो मेरे पास था उसकी फिक्र थी न हीं बिना टिकट सफर करने का डर। खैर अगला स्टेशन था भुवनेश्वर । जब ट्रेन भुवनेश्वर पहुँची मैं अपना और मण्डल जी का सामान लेकर ट्रेन से नीचे उतरा। मण्डल जी भी आए, अब अपना सामान लिया और स्टेशन से बाहर निकले। रिक्सा लिया और रिक्सावाले को पता बताकर चलने को कहा। उन दिनों दक्षिण पूर्व सर्किल कार्यालय रवि चौक से थोड़ी दूर पर

राजा-रानी मन्दिर के निकट था। हम दोनों कार्यालय पहुँचे, कार्यालय के खुलने में अभी थोड़ा समय बाकी था। हमारे ठहरने की व्यवस्था थी। दिनांक 06-04-1984 को हम दोनों ने दक्षिण पूर्वी सर्किल कार्यालय में कार्यग्रहण(ज्वाइन) किया । पूरे दिन कार्यालय की विभिन्न औपचारिक प्रक्रियाओं में बीत गए। हमें बताया गया कि अगले दिन हमें हैदराबाद के लिए प्रस्थान करना होगा और यात्रा भत्ता की अग्रिम राशि के रूप में कुछ रकम भी दी जाएगी। हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। निर्देश के अनुसार हम दोनों भुवनेश्वर स्टेशन जाकर हैदराबाद आने हेतु टिकट खरीदा और आरक्षण भी कराया। ट्रेन थी कोणार्क एक्सप्रेस जो अभी भी उसी नाम से चल रही है। अग्रिम रकम मिलने की आस में हमदोनों ने कुछ अनावश्यक खरीद दारी भी कर ली। दूसरे दिन वहाँ से प्रस्थान के लिए आदेश पत्र प्राप्त हुआ और पता चला कि जो अग्रिम राशि मिलने वाली थी अब नहीं मिलेगी, यह राशि हैदराबाद पहुँचने क पश्चात् ही मिलेगी। यह जानकर निराशा हुई और गुस्सा भी आया कि प्राप्त होने वाली राशि की आशा में हमने अनावश्यक ही अपने पास के पैसे खर्च कर दिए। अगली शाम हमदोनों ट्रेन से हैदराबाद के लिए रवाना हो गए। पहली बार 24 घंटे का ट्रेन का सफर वो भी द्वितीय श्रेणी में आरक्षण कराकर । कभी लेटते तो कभी बैठते हमारा सफर सिकंदराबाद स्टेशन पर समाप्त हुआ। शाम का समय था, स्टेशन से 18 नम्बर की बस पर चढ़कर हम उप्पल आ गए । कार्यालय बन्द हो चुका था। हमें मुख्य प्रवेश द्वार पर कुछ औपचारिकताओं को पूरा करने के उपरान्त सर्वे गेस्ट हाउस भेज दिया गया। हमने हैदराबाद में पहली रात भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सर्वेक्षण प्रशिक्षण संस्थान के अतिथि गृह में बिताए। यात्रा की थकान थी परन्तु हम दोनों को गद्देदार मुलायम बिस्तर पर नींद नहीं आई। कभी-कभी जीवन में ऐसी अकल्पनीय घटनाएँ हो जातीं जिसे याद कर थोड़ी आनन्द की अनुभूति होती है और थोड़ा आश्चर्य भी। ऐसा ही वाकया है अतिथि गृह में एक रात गुजारने का। जिस समय मैं टी.टी.टी.'ए' था, उस समय मुझे बिना मांगे ही अतिथि गृह में ठहरने का सौभाग्य प्राप्त हो गया था जबकि अब विभाग में सेवारत 37 वर्ष बीत चुके हैं, मैं उस अतिथि गृह में ठहरने का अधिकारी (हकदार) नहीं हूँ। खैर हमारा प्रशिक्षण दो वर्ष के पश्चात् सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ और मेरी तैनाती दल संख्या 74(द0पू0स0) कार्यालय राँची में हो गई।

मेरी तरह ही मण्डल जी की चयन प्रक्रिया की कहानी भी बड़ी ही रोचक है। दो वर्ष के प्रशिक्षण के दौरान मैं और मण्डलजी प्रशिक्षु जोड़ीदार (Trainee Partner) रहे। इस दौरान हीं उन्होंने बताया कि कैसे उनका चयन हुआ। हुआ यूँ कि दिसम्बर के महीने में गांव में धान की कटाई और मिसाई होती है। बहुत सारे छोटे किसान के घर के अंगन में इतनी जगह नहीं होती कि फसल की मिसाई वहां की जा सके। फलस्वरूप वे खेत में ही थोड़ी जगह फसल की मिसाई हेतु तैयार कर लेते हैं जिसे खलिहान कहते हैं। धान की फसल को

पुवाल सहित फैला दिया जाता है और तीन-चार बैलों को बांधकर उस पर गोल-गोल चलाया जाता है। इसे दौनी भी कहते हैं। बैलों को हांकने हेतु एक व्यक्ति को बैलों के पीछे-पीछे घूमना पड़ता है। मण्डल जी यही कार्य कर रहे थे। पोस्टमैन अर्थात डाकिया उन्हें वहीं पर टी.टी.टी.'ए' की परीक्षा में उपस्थित होने हेतु प्रवेश पत्र वाला लिफाफा दे गया। मण्डल जी ने लिफाफा खोला और परीक्षा का दिनांक देखा 31-12-1983, दिसम्बर का दूसरा सप्ताह चल रहा था। उन्हें लगा परीक्षा की तिथि 31-11-1983 है जो बीत चुका है, न जाने उस समय किस ध्यान में थे। उन्होंने पत्र को वहीं खेत में फेंक दिया। शाम हुई, रात हुई, फिर जब वे सोने गए तब विचार आया कि पत्र को तो उन्होंने ठीक से पढ़ा ही नहीं और यूँ ही फेंक दिया। सुबह हुई तो दौड़े खलिहान गए, देखा पत्र तो ओस से बुरी तरह भीग चुका है। भीगे पत्र को ध्यान से पढ़ा और पाया कि परीक्षा की तिथि तो बीती नहीं बल्कि आने वाली है। पत्र को उन्होंने चुल्हे की आग में सेक कर सुखाया और बड़ी जतन से संभाल कर रखा। परीक्षा का दिन आया, परीक्षा दी ओर वे उत्तीर्ण हुए। मण्डल जी अधिकारी सर्वेक्षक के पद पर सेवा करते हुए सेवा निवृत्त हुए और आजकल अपने गांव में अपने परिवार के साथ आनंदित जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

कभी-कभी अनेकों अवसर पर हम दोनों कहते रहते थे और अभी भी कहते हैं कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने हम दोनों को घर से उठाकर भर्ती किया तथा सेवा करने का अवसर दिया। कहां भुवनेश्वर और कहां कटिहार, छोटा सा शहर। भुवनेश्वर से अधिकारियों का लगभग 800 किलोमीटर दूर कटिहार जाकर हम दोनों का चयन करना अपने-आप में गजब का संयोग है।

यहां मैं एक बात का उल्लेख करना चाहूँगा कि जिस अधिकारी ने मेरे टी.टी.टी.'ए' की परीक्षा हेतु प्रवेश पत्र पर निदेशक, द0पू0स0 की ओर से हस्ताक्षर किया था, परीक्षा और साक्षात्कार लेकर मेरा चयन किया था, मैंने उनके साथ एक वर्ष तक मध्य क्षेत्र (Central zone) जबलपुर में तकनीकी अधिकारी के रूप में कार्य किया, उनसे बहुत कुछ सीखा, और सेवा निवृत्ति पर विदाई दी। परन्तु एक बात की कसक दिल में रह गई कि उन्हें कह नहीं पाया कि मेरा चयन उन्होंने ही किया था, क्योंकि मुझे भी हैदराबाद आने के पश्चात् एक दिन उस पुराने प्रवेश पत्र पर किये गए हस्ताक्षर पर नजर पड़ने से याद आया। वे और कोई नहीं अपितु अपर महासर्वेक्षक, श्री यु.बन्धोपाध्याय थे।

*** ***** ***

उत्कृष्टता वो कला है जो प्रशिक्षण और आदत से आती है.हम इस लिए सही कार्य नहीं करते कि हमारे अन्दर अच्छाई या उत्कृष्टता है , बल्कि वो हमारे अन्दर इसलिए हैं क्योंकि हमने सही कार्य किया है। हम वो हैं जो हम बार बार करते हैं.इसलिए उत्कृष्टता कोई कार्य नहीं बल्कि एक आदत है।

एरिस्टोटल

पेड़

--- श्री डी.नागतेजा,
अवर श्रेणी लिपिक

मैंने चाहा उसे बचा लूँ
भरसक कोशिश की कि झुका दूँ एक टहनी
जिसे वह बचपन में पकड़ कर
चढ़ जाया करता था मेरे ऊपर।

मैंने चाहा चीखूँ उसके साथ "बचाओ.....!"
पानी के बीच एक मात्र खड़ा मैं,
छूना चाहता था उसकी उंगली के पोर को
जो दिखा अंतिम बार पानी में डूबने से पहले।

मत काटो मुझे,
अभी-अभी थक कर आई है एक चिड़िया।
मत काटो मुझे,
अभी सोई है एक चिड़िया।
मत काटो मुझे
अभी-अभी माँ बनी है एक चिड़िया।

*** ***** ***

ग्लोबल वार्मिंग का दुष्परिणाम है दुनिया के सामने |
पर्यावरण की रक्षा सूत्र होंगे सबको अपनाने||

ग्लोबल वार्मिंग से है खतरे में जान |
पर्यावरण की रक्षा करना सबकी शान||

तुलसीदास के राम

--- श्री नरबहादुर,
प्रवर श्रेणी लिपिक

तुलसीदास अपने युग में भारतवर्ष के सबसे महान व्यक्ति थे। हिन्दी साहित्य में तुलसीदास का स्थान सर्वोच्च है। उनकी कृति "रामचरितमानस" को जो लोकप्रियता, प्रेम और आदर प्राप्त हुआ, वह इसके पहले अन्य किसी भी भारतीय ग्रन्थ को कभी प्राप्त नहीं हुआ। करोड़ों नर-नारियों के हृदय पर प्राप्त की हुई कवि की विजय, किसी भी सम्राट की एक या समस्त विजयों की अपेक्षा असंख्य गुनी, अधिक चिरस्थायी और महत्वपूर्ण है।

तुलसीदास के दृष्टिकोण में भक्ति-भाव प्रधान रूप से होते हुए भी उनकी भावना सामाजिक है। देश और समाज की रीति, नीति और संस्कृति का जो रूप उन्होंने हमारे सामने रखा है, उससे उनके सामाजिक और राजनैतिक आदर्श स्पष्ट होते हैं। वे समाज को जिस रूप में देखना चाहते थे, वह रामराज्य का रूप है, जिसमें राजा के कर्त्तव्य के साथ जन-समूह और प्रजा की कर्त्तव्यपरायणता भी आवश्यक है। उन्होंने जिस रामराज्य का चित्रण किया है, उसको व्यावहारिक भी बना दिया है। इस प्रकार के रामराज्य की स्थापना के लिए यह आवश्यक नहीं कि राम ही राजा हों। जिस प्रकार चौदह वर्ष तक भरत अपने राम के आदर्श को सामने रख कर त्याग और सेवा-भाव से शासन संभाले रहे, उसी प्रकार शासन-सूत्र जिसके हाथ में हो, वह यदि अपने को भरत समझ कर शासन को राम की छाती के रूप में स्वीकार कर प्रबन्ध करे, निश्चय ही वह कल्पना का राज्य वास्तविक हो सकता है।

संसार को क्षणभंगुर मानकर और उसके प्रति निर्लेप एवं निर्वेद का भाव जगाकर संत कवियों ने आर्थिक दासता से हमें मुक्ति प्रदान की है। तुलसीदास भी मनुष्य के सामाजिक स्नेह-भाव के मार्ग में तीन प्रकार की ईर्ष्याओं को बाधक मानते हैं। वे हैं-सुत, वित और लोक संबंधी ईर्ष्याएं। इन ईर्ष्याओं से मुक्त होकर ही व्यक्ति सामाजिक हित कर सकता है और समत्व का भाव विकसित कर सकता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि महात्मा गांधी में यही प्रभाव व्याप्त था। अतः तुलसीदास का दृष्टिकोण हमारी आर्थिक गुलामी से हमें मुक्ति प्रदान करता है।

तुलसीदास के पूर्व और उनके समय में भी ज्ञान और कर्मकाण्ड की रूढ़ियां प्रबल थीं। इन रूढ़ियों का भगवान बुद्ध ने एक बार खंडन किया था, पर वे फिर नए रूप में बन गई थीं। तुलसीदास ने इन रूढ़ियों की भित्तियों को ध्वस्त करके भक्ति का मार्ग सभी के लिए सुलभ कर दिया। वैसे रूढ़ियों के खंडन में तुलसीदास ने संत कबीर की भांति उग्रता ग्रहण नहीं की, फिर भी उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों का खंडन कर एक उदार दृष्टिकोण का विकास किया और व्यर्थ के भेदभाव को दूर किया। यहाँ पर हमें उनसे वर्गाश्रम-व्यवस्था संबंधी प्रश्न को इसलिए नहीं उठाना चाहिए, क्योंकि उनका वास्तविक उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था कायम करना था, न कि भेदभाव बढ़ाना। उन्होंने तो वास्तविक स्वालंबन एवं स्वतंत्रता की भावना का विकास किया।

तुलसी ने जीवन की पूर्ण कल्पना की, न कबीर कर सके, न सूर और न कालीदास और न भवभूति ही। जिस जीवन-कल्पना को महाकवि वाल्मीकि ने प्रस्तुत किया था, उसका ही परिष्कार करके और समाज के अनुरूप बना कर तुलसीदास ने राम के चरित के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया। बाल्यकाल से लेकर राज्याभिषेक तक जितनी विविध परिस्थितियों में राम का जीवन विकसित हुआ, वे केवल जीवन की विविध रूपता ही प्रस्तुत नहीं करती, बल्कि हृदय का मंथन कर देने वाली गंभीरता और विषमता भी उपस्थित करती हैं। हम रामचरितमानस को केवल साहित्यिक रचना के ही रूप में नहीं देख सकते, वरन् अनेक स्थानों पर ऐसा लगता है कि हम घटनाओं से दूर नहीं, उन्हीं के बीच खड़े हैं और परिस्थिति मुँह फैलाए हमारे सामने हमारी कर्त्तव्य दृष्टि और विवेक को निगल जाने को आतुर है। ऐसे धर्म-संकट ही जीवन को गंभीरता प्रदान करते हैं।

विश्वामित्र के आगमन पर दशरथ, धनुष न टूटने पर जनक, वनवास का वरदान मांगने पर दशरथ, राम, कौशल्या, सीता आदि समस्त परिवार, चित्रकूट में भरत और राम, वन में सीता हरण पर राम और लक्ष्मण, समुद्र तट पर राम, शक्ति लगने पर राम, अशोक वाटिका में सीता आदि गंभीर संकटों में पड़ते हैं, लेकिन अपने शील और विवेक से उसके पार हो जाते हैं। ऐसे ही माता-पिता, भाई, सास-बहू, स्वामी-सेवक, मित्र-शत्रु, राजा-प्रजा आदि विविध संबंधों का चित्रण और निर्वाह, बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक के सुख-दुःखपूर्ण उत्सव और संस्कार, राज्याभिषेक, धनुषयज्ञ, चित्रकूट और रणक्षेत्र के समारोह, सरल से सरल और कुटिल से कुटिल व्यक्ति के साथ कर्त्तव्य आदि जीवन के बहुमुखी पक्ष हैं, जिनका मार्मिक चित्रण करके तुलसीदास ने हमारे मानसों को परिपूर्ण कर दिया है।

तुलसीदास समन्वय की विराट परंपरा के संस्थापक थे। उन्होंने अपने समय की असंगतियों की गहराई से पड़ताल की थी। आज हमारी राजनीति में जो पंचशील का उच्चारण सुनाई देता है या धर्मक्षेत्रों में जो सर्वधर्म समभाव दिखाई देता है, उसकी पृष्ठभूमि में तुलसीदास की "विनयपत्रिका" और "कवितावलियों" का महान योगदान है। इसे नहीं पहचानना, अपने जीवन-सत्य को नहीं पहचानने के समान है।

तुलसीदास ने सगुण-निर्गुण में भेद नहीं माना। उनके अनुसार जो निर्गुण है, अरूप है, अलक्ष्य है और अजर है, वही हमारी गहरी प्रीति की वजह से सगुण, रूपवान, लक्ष्यमय और मानवीय हो जाता है। प्रीति में आलंबन अनिवार्य है।

भौतिकवाद ने जिस देशभक्ति को निगल लिया है, जिन आस्थाओं को उन्मूलित कर दिया है, जिस तरह अर्थतंत्र को हृदयतंत्र से बड़ा और अमर्यादित बना दिया है, उसी तरह इस देश के शीलत्व पर भी आक्रमण किया है। विदेशी ताकतें हमें विखंडित होते देख रही हैं और हमारी कमजोरियों से लाभ भी उठा रही हैं। ऐसे माहौल में तुलसीदास को याद करने का एक अर्थ यह भी है कि हम ऐसे खतरों से सावधान हों और अपने शील को जागृत रखें। शील-जागरण से ही यह देश अखंड और सक्षम बना रह सकेगा। तुलसीदास के लिए विश्व-सत्य, विश्व-मंगल और विश्व-सौन्दर्य, उनके आत्म-सत्य, आत्म-मंगल और आत्म-सौन्दर्य से अभिन्न था। तुलसीदास के राम ने शताब्दियों पहले एक प्रतिज्ञा की थी। समय के साथ उस प्रतिज्ञा का महत्व बढ़ गया है। आज हमारे देश के भीतर और बाहर देशद्रोहियों, राष्ट्रविक्रेताओं और निशाचरों का बोलबाला है। सत्ता, बुद्धिजीवी और सज्जन इनसे भयभीत हैं, लेकिन कुछ कर पाने में असमर्थ हैं। ऐसी स्थिति में देश के प्रत्येक व्यक्ति को राम की प्रतिज्ञा को अपने कर्म से पुनर्जीवित करना है। यह तभी संभव हो सकेगा, जब आध्यात्मिकता और भौतिकता में, व्यक्ति और समाज में, चिंतन और कर्म में तथा प्रकृति और संस्कृति में गंभीर समन्वय हो।

*** ***** ***

लगातार अच्छे विचार सोचते रहना ही बुरे विचारों को दबाने का एकमात्र तरीका यही है।

- स्वामी विवेकानंद

पदोन्नत अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची :

क्रम सं0	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	पदोन्नति की तिथि	पद जिस पर पदोन्नत हुए
1.	मिर्जा शैकतुल्ला बेग	प्रवर श्रेणी लिपिक	24–12–2020 (पूर्वाहन्)	सहायक

स्थानांतरित अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची :

क्रम सं0	नाम श्री / श्रीमती	वर्तमान पद	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				जहां से	जहां को
1.	डी. नरसिंगा राव	सर्वेक्षक	18–09–2020 (पूर्वाहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	ए.पी. एण्ड टी.जी.डी.सी. हैदराबाद
2.	एस. वेंकाटेशवर राव	सर्वेक्षक	08–10–2020 (अपराहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	डेटा अर्जन विंग ए.पी. एण्ड टी.जी.डी.सी. विशाखापट्नम
3.	के. प्रवीण कुमार	सहायक	17–12–2020 (अपराहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	मुद्रण क्षेत्र, हैदराबाद
4.	शुभ्रा गुप्ता	मानचित्रकार (डिविजन–I)	22–03–2021 (अपराहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	मुद्रण क्षेत्र, हैदराबाद
5.	मधु चम्बत	अधिकारी सर्वेक्षक	02–06–2021 (अपराहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	केरल और लक्षद्वीप जी.डी.सी. तिरूवनन्थापुरम
6.	के. प्रभुजी	अधिकारी सर्वेक्षक	26–07–2021 (अपराहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	गुजरात द्वीव एण्ड दमन जी.डी.सी., गांधीनगर
7.	अजय सिंह	अधिकारी सर्वेक्षक	30–07–2021 (अपराहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	कर्नाटक जी.डी.सी., बेगंलुरू

8.	विनय कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	30–07–2021 (अपराहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	डी.एम.सी., देहरादून
9.	वी. रामाचारी	अधिकारी सर्वेक्षक	30–07–2021 (अपराहन्)	भौ0सू0प0 एंव सु0सं0नि0,हैदराबाद	टी.एन.पी. एण्ड ए.एन.आई. जी.डी.सी., चेन्नई

स्थानांतरण पर तैनात अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची :

क्रम सं0	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				जहां से	जहां को
1.	बी.सी.परिडा	निदेशक	09–04–2021 (पूर्वाहन्)	जम्मू व कशमीर एंव लद्वाख जी.डी.सी., जम्मू	भौ0सू0प0 और सु0सं0निदेशालय

सेवा निवृत अधिकारियों / कर्मचारियों की सूची :

क्रम सं0	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	सेवा निवृति की तिथि
1.	जे.वी.एस. लक्ष्मी	सहायक	31–12–2020 (अपराहन्)
2.	वी. जोसफ	एम.टी.एस. (जमादार)	31–03–2021 (अपराहन्)
3.	जी. बाला गोराय्या	एम.टी.एस. (दफादार)	31–03–2021 (अपराहन्)
4.	जे. नागाय्या	एम.टी.एस.(दफादार)	30–04–2020 (अपराहन्)
5.	मिर्जा शैकतुल्ला बेग	सहायक	स्वेच्छिक सेवा निवृति 31–05–2021 (पूर्वाहन्)
6.	के. राज्य लक्ष्मी	सहायक	31–08–2021 (अपराहन्)

नियुक्ति

क्रम सं0	नाम	पदनाम	नियुक्ति की तिथि
1.	श्रीमती बी.आर. सुकन्या	एम.टी.एस.	13–05–2021

वर्ष 2020-2021 के लिए मानदेय से पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूचीः

क्रम सं0	नाम सर्व श्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम
1.	अरुण कुमार टीएस	अधिकारी सर्वेक्षक
2.	भूपेन्द्र सी परमार	सर्वेक्षक
3.	चाकली हरिनाथ	सर्वेक्षक
4.	गादर्ला महेश	सर्वेक्षक
5.	तन्नीरु देवेन्दर	सर्वेक्षक
6.	एड्ला सुरेश	सर्वेक्षक
7.	बंडारी बसवराजु	सर्वेक्षक
8.	जी.प्रेम कुमार	प्रवर श्रेणी लिपिक
9.	गौरव पटेल	अवर श्रेणी लिपिक
10.	ए.इस्साक	एमटीएस

एक लोकतंत्र में, देश की समग्र समृद्धि, शांति और ख़ुशी के लिए हर एक नागरिक की कुशलता, वैयक्तिकता और ख़ुशी आवश्यक हैं।

एपीजे अब्दुल कलाम

सेवा निवृत अधिकारी - वर्ष 2020-21

सेवा निवृत अधिकारी - वर्ष 2020-21 / स्थानांतरण पर तैनात अधिकारियों

हिंदी दिवस समारोह / राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

विभिन्न कार्यक्रम

करें शक्ति का आवाहन

--- श्रीमती के.पूर्णिमा,
डी/मैन डिविजन-I

ज्योति-सरित प्रवाहित कर भेद तमस का आच्छादन,
करें शक्ति का आवाहन !
सरस्वती माँ बुद्धि सकल दें
सुख-वैभव के लक्ष्मी फल दें
दुर्गति नाशिनी दुर्गा दें निजवरद हस्त का आश्वासन,
करें शक्ति का आवाहन !

भाव हमारे अशुद्ध हो रहे
पंच तत्व ही क्रुद्ध हो रहे
विश्वमंच पर होता है नित, काल-नृत्य का उद्घाटन,
करें शक्ति का आवाहन !

क्रूर अहेरी घूम रहे हैं
धरती को खग चूम रहे हैं
जल-थल-नभ में सजे हुए हैं सर्वनाश के संसाधन
करें शक्ति का आवाहन !

श्रांत, क्लांत, आक्रांत हुआ है
जन-जन का मन भ्रांत हुआ है
दुष्ट आसुरी वृत्ति लगी है करने अभिनय दुःशासन,
करें शक्ति का आवाहन !

आकुल-व्याकुल जीवन सारा
भय से कातर जगत हमारा
संशय खोकर, निर्भय होकर करें क्रांति का आराधन,
करें शक्ति का आवाहन !

*** ***** ***

एक नायक बनो और सदैव खुद से कहो मुझे कोई डर नहीं है जैसा मैं सोच सकता हूं वैसा जीवन में जी भी सकता हूँ।

- स्वामी विवेकानंद

विकार मंजिल
(भग्न हृदयों का भूतिया महल)

--- श्रीमती के.प्रसन्ना लक्ष्मी,
हिंदी अनुवादक

वास्वत में हैदराबाद को प्रेमनगर का नाम दिया जा सकता है क्योंकि इस शहर में एक "पुराना पूल" है, जो पुत्रप्रेम में वशीभूत एक बूढ़े पिता ने अपने पुत्र के लिए बनवाया। उस पुत्र का नाम कुली कुतुब शाह था और वह बारीश के मौसम में आई बाढ़ में भी मूसी नदी में तैरकर अपनी प्रेमिका से मिलने जाया करता था। आज जिस इमारत में विमेन्स कॉलेज चलाया जा रहा है उसका नाम था "कोठी रेसिडेन्सी", जिसका निर्माण अपनी मुस्लिम पत्नी के लिए एक अंग्रेज ने करवाया था। एक अमीर मुसलमान ने अपनी फारसी पत्नी के लिए एक महल बनवाया जिसका नाम है "विकार मंजिल"। यह आदमी और कोई नहीं बल्कि फलकनुमा पैलेस का निर्माण कराने वाला विकार उल उम्रा है। ये सभी प्रेम कहानियां उस ज़माने की है जब लोग बिना कट्टरता के विभिन्न जाति, धर्म और संस्कृतियों में सामंजस्य व आपसी सूझ-बूझ से जीना जानते थे।

नेकलेस रोड से गुजरते हुए संजीवय्या पार्क की ओर जाते समय आपको बाएं तरफ रेल-लाइन के पीछे एक बड़ा बंगला दिखता है। वही है विकार मंजिल। शिथिलावस्था में निर्मानुष्य और अकेला ठहरा हुआ यह महल अब भूत-बंगले जैसे दिखता है। चमगादडों ने इसे अपना निवास स्थान बना लिया है और बेगम पेट, प्रकाश नगर की प्रजा यकीन के साथ कहती हैं कि उस बंगले में एक फारसी भूतनी घूमती फिरती रहती है। आज का विकाराबाद भी एक ज़माने में विकार उल उम्रा की जागीर हुआ करती थी। इसी कारण से उस जागीर का नाम " विकाराबाद " पड़ गया है। वहाँ के अनंतगिरी की हवाएं बहुत ही प्राण-प्रदायनी मानी जाती है। कहावत भी है कि "विकाराबाद की हवा एक लाख की दवा "। निज़ाम के ज़माने में ही वहाँ पर एक टी.बी.सैनिटोरियम बनवाया गया।

विकार उल उम्रा की दो शादियां हुई थी जो बड़े-बुजुर्गो ने तय करके की थी। उनकी दो पत्नियों में से एक निजाम नवाब की बहन थी। तीसरी शादी उन्होंने अपनी मर्जी से एक फारसी युवती की ओर आकर्षित होकर की थी। इस फारसी युवती का नाम था "गुलाबी" जो पेशे से हैदराबाद में डॉक्टर थी। वह "विकाजी" नामक उन्नत व अमीर फारसी परिवार की बेटी थी, खानदानी संपत्ति की अकेली वारिस। निकाह के बाद गुलाबी ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया तथा नूरजहॉन

कहलाई। डॉक्टरी छोड़कर पर्दा स्वीकार किया और घर तक सीमित रह गई।

विकार उल उम्रा का कार्यदर्शी अर्थात् सेक्रटरी का नाम था रज़ाक अली बेग। रज़ाक-अली-बेग भी एक उन्नत,अमीर घराने का था और एक ऊंची पडाड़ी पर एक सुंदर महल बनवाना शुरू किया था। लेकिन वह बहुत ही खर्चीले स्वभाव का निकला। इमारत बनाने के लिए आवश्यक पानी को भी नीचे से पहाड़ी पर चढ़ाना पडता था। इमारत बनवाने के काम को लेकर लोग मजाक करने लगे थे कि, "चार आणा मुर्गी को बारह आणा मसाला"। रज़ाक-अली-बेग ने भी समझ लिया कि इमारत बनवाना अपने बस की बात नहीं है। आखिर में उन्होंने एक तरकीब सोची और विकार उल उम्रा को उस अपूर्ण महल में ही खाने पर बुलाया। चांदनी रात में धूम-धाम और गाने-बजाने के साथ उनका आतिथ्य रंग लाया। मेहमान उस सुंदर वातावरण के वशीभूत हो गया। सामने हुसैन सागर के लहरों से आता शीतल समीर, शांत प्रकृति, आसमान के नीचे नए महल का आनंद उठाते समय रज़ाक अली बेग ने विकार-उल-उम्रा को उस निर्माणाधीन महल को नजराना में दे दिया। विकार उल उम्रा ने भी खुशी से तोहफा स्वीकार किया, इतना ही नहीं महल के निर्माण का पूरा खर्चा भी चुका दिया। उस अपूर्ण महल को सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से सुसज्जित कर नामकरण किया "विकार मंजिल" तथा अपनी प्रिय बेगम नूरजहॉन को प्यार का नज़राना समर्पित किया।

उस महल में दो वसंत ऋतुओं का समय जैसे दो पल में ही बीत गए और 1902 में विकार-उल-उम्रा का अचानक निधन हो गया। विकार उल उम्रा की दूसरी पत्नी पांचवे निजाम की बेटी व छठे निजाम की बहन थी। अपने स्वार्थ के लिए किसी की भी हत्या करवाने वाले मुगलों का खून उसके रगों में दौडता था। जिसे भी वह नापसंद करती थी उसे आसानी से मरवाने की कहानियां सुनने में आती थीं। एक नौकरानी की मौत के पीछे उसकी गुप्त चाल के बारे में लोग फुस-फुसाते थे। विकार उल उम्रा की मौत के बाद डर के मारे नूरजहॉन जान बचाने के लिए नौकरानी का पोशाक पहनकर फरार हो गई और ब्रिटिश रेसिडेन्सी में शरण ले ली। निजाम की बहन अर्थात् विकार उल उम्रा की दूसरी पत्नी ने विकार मंजिल के कमरों को बंद करवाया तथा दरवाजों पर ताले जड़वा दिए । दस बरस की कानूनी लड़ाई जीतने के बाद नूरजहॉन अपने प्रेममहल में लौट आई, लेकिन तब तक महल में मौजूद सभी कीमती सामान गायब हो चुके थे। उसका अत्यंत प्रिय उद्यानवन भी तहस-नहस हो चुका था।

जब विकार महल में उन्हें उनकी पुरानी यादें अधिक घायल करने लगी तब नूरजहॉन "विकार मंजिल" छोड़कर, एक छोटा सा किराए का मकान लेकर रहने लगी। उसने वहीं चित्रकारी करते हुए 30 वर्ष का समय व्यतीत किया। 1931 में शहर में फैली प्लेग की बीमारी का शिकार होने के कारण उनकी मौत हो गई।

जब भी आप नेक्लेस रोड से गुजरते हुए रेल

लाइन पार "विकार मंजिल" को देखते हैं , तब पल भर शांति के लिए दुआ कीजिए।

के लिए उस फारसी युवति की असंतुष्ट आत्मा की

(परवस्तु लोकेश्वर प्रणीत तेलुगु भाषा मूल "शहरनामा" से अनूदित)

*** ***** ***

" सात घनघोर पाप हैं :- "

1. *काम के बिना धन*
2. *अंतरात्मा के बिना सुख*
3. *मानवता के बिना विज्ञान*
4. *चरित्र के बिना ज्ञान*
5. *सिद्धांत के बिना राजनीति*
6. *नैतिकता के बिना व्यापार*
7. *त्याग के बिना पूजा*

\- *महात्मा गांधी*

समय ईश्वर है

---कुमारी जे.हिमवर्षा
पुत्री
श्रीमती जे0 भारती राज
डी/मैन ग्रेड-I

समय रुकता नहीं है कभी, चलता रहता है निरन्तर ।
सुख में छोटा लगता है, दुःख में लम्बा लगता है ॥
कभी आँखों में आँसू निकलवाता है।
कभी होंठों पर मुस्कान लाता है ॥
निश्चित गति से बस चलता रहता है।
सिखाता है हमें जीवन जीना ॥
सीख लेते हैं हम भी इस तरह।
अपने गम को खुद ही झेलना ॥
सार्थक काम के लिए नहीं हैं, हमारे पास कुछ क्षण।
पर बर्बाद करने के लिए हैं बहुत सारे क्षण ॥
भूल गए हैं समय के सत्य को हम सभी।
पाना चाहते है; हम सब कुछ तत्काल ही ॥
उसने कहा था कि " मैं काल हूँ" , तुम मात्र कर्म करना।
फल की अपेक्षा या चिंता मत करना ॥
तुम्हारे कर्म व नियति के अनुसार परिणाम निकलेगा।
निश्चित समय के पश्चात् फल मिलेगा ॥
हम दौड़ रहे हैं, भाग रहे हैं; कुछ पाने हेतु तरस रहे हैं।
पर यह नहीं जानते हैं कि हमें क्या पाना है ?, कहाँ जाना है ?
समय तो समय है, हमारे जन्म से पूर्व भी इसकी वही गति थी।
हमारी मृत्यु के पश्चात् भी इसकी वही गति रहेगी ॥
जितना ही मिला है हमें समय, इसे सँवार लें, इसे सम्भाल लें।
करें कुछ ऐसा कि हम रहें या न रहें, समय बीतने पर भी हमारा नाम रहे ॥
समझ कर समय को, चलें साथ समय के।
चलते रहें समय की तरह, करते रहें अपने कर्त्तव्य ॥
यही सिखाता है समय, यही समझाता है समय।
समय समय है, समय काल है, समय अनन्त है, समय ईश्वर है ॥

*** ***** ***

परिश्रम सौभाग्य की जननी है ।

- बेंजामिन फ्रैंकलिन

श्वान-सापेक्ष संस्कृति

---श्री बी.सी.परमार
सर्वेक्षक

दादा-दादी चिंतित हैं। उन्हें सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि इतनी बेरहमी से संस्कारों का अवमूल्यन हो जाएगा। उनकी पीढ़ी घर में गाय पालती थी,गाय को माता का दर्जा दिया जाता था। एक ओर जहाँ गाय का दूध घर वालों को पौष्टिकता प्रदान करता था, वहीं उसका गोबर घर लीपने और खाद बनाने के काम आता था। गोबर से बने कण्डों का धुआँ वातावरण से कीटाणुओं का नाश करता था। उनकी पीढ़ी गाय की पूजा करती थी, गऊ माता शुभ और कल्याणकारी मानी जाती थी, गऊ माता से लोग आशीर्वाद माँगते थे। दादा-दादी की पीढ़ी के लिए गाय एक दूध देने वाली प्राणी मात्र नहीं थी, बल्कि एक संस्कार थी। उस पीढ़ी के लोग इस पवित्र संस्कार से बँधे हुए थे।

पुरानी पीढ़ी भ्रमित है। आखिर पोते की पीढ़ी तक आते-आते संस्कार कहाँ दिग्भ्रमित हो गए ? दादा-दादी सोचते हैं कि उनके बेटे अर्थात् उनके पोते के बाप ने भी गाय के दूध-घी का सेवन किया था फिर पोता श्वान-संस्कार से कैसे बँध गया।

सदियों से हर पीढ़ी अगली पीढ़ी पर अपने संस्कार लाद देती है। दादा-दादी ने अपने बेटे पर गाय और गोबर के संस्कार लादकर अपना मानव-जन्म सार्थक कर लिया, पर पोते ने उन संस्कारों को दुलत्ती मार दी। कुत्ता पालकर उसने खुले आम घोषणा कर दी कि गाय और गोबर की पवित्रता का जमाना लद गया। अब कुत्ता और गंदगी के युग की शुरुआत हो चुकी है।

दादा-दादी अपने संस्कारों को लुटा-पिटा देख कर प्रायः सोचते हैं कि ऐसा हुआ कैसे? दादा अपनी पत्नी से जि-ासा व्यक्त करते हैं, "मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसा कैसे हो गया ? अपने बेटे को तो हमने अच्छे संस्कार दिए थे।" दादी के पास जवाब तैयार है, "यह आप अपनी लाडली बहू से पूछिए कि वह अपने मायके से कैसे संस्कार लायी थी। हमारे घर के संस्कारों में उसी के घर के संस्कारों ने सेंध लगाई है।" सास के रूप में दादी का मत स्पष्ट है, परोक्ष रूप से उसने कह दिया है कि कुत्ते के संस्कार बहू अपने मायके से लाई है। समाजशास्त्र का यह तथ्य तो स्थापित हो चुका है कि शादी के बाद बेटे को बहू ले उड़ती है। समाजशास्त्रियों के लिए यह भी गहन सोच का विषय है कि बेटा तो बहू का हो ही जाता है; ससुर भी अपनी कटखनी बीवी को छोड़, बहू का पक्षधर हो जाता है। दादा अपने पुरुष प्रधान समाज के संस्कार ओढ़ते हुए लगभग चीखते हुए बोले, "तुम्हें तो बहू में ही सारे दोष दिखते हैं। वह जब से इस घर में आई है, तुम उसके पीछे पड़ी हो। अच्छे-भले घर से आई है तो अच्छे

ही संस्कार लाएगी न बहू।" दादी कुढ़ कर पति को झिड़कती है, "तुम तो सठिया गए हो जी !" दादा मुँह चिढ़ाते हुए कहते हैं, "हाँ ! हाँ ! मैं सठिया गया हूँ ! और तेरी तो उल्टी गिनती चल रही है। बीस-पच्चीस की तो हो कि नहीं?"

बुजुर्ग दंपत्ति का संघर्ष इसी बिन्दु पर प्रायः दम तोड़ देता है। पर समस्या ज्यों का त्यों है, बल्कि दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। गाय से बँधे हुए संस्कार कुत्ते के गले की पट्टी बनते जा रहे हैं। बाप कितना भी अपने बेटे को निकम्मा समझे, माँ कितना भी अपनी बहू को कोसे, पर दोनों अपनी अपेक्षाएँ अपने पोते पर टिका देते हैं। दादा-दादी भी अपवाद नहीं हैं। बड़े लाड़-प्यार से पाला है उन्होंने अपने पोते को। वह उनका अंश है और उनका प्रतिनिधित्व करता है। जो काम उनका निकम्मा बेटा नहीं कर सका, उसकी आशा वे अपने पोते से रखते हैं।

घर की परम्परा बदल रही है । लोग कहते हैं, सारा दोष पोते का है। उसे अपने परिवार वालों की भावनाओं की इज्ज़त करनी चाहिए। पर वह बेचारा क्या करे? जहाँ सारी सभ्यता और संस्कृति ही कुत्ते से जुड़ गई हो, वहाँ पोते का दोष कैसे स्थापित किया जा सकता है? आज समाज की कचहरी में हैसियत की गवाही देने के लिए कुत्ते चाहिए।

दादा-दादी पोते से जुड़े हैं और पोता कुत्ते से जुड़ा है। दादा-दादी पोते की तरफ़दारी को विवश हैं, क्योंकि उसमें वे अपना तथाकथित भविष्य देखते हैं। कुत्ते ने इस विवशता को भाँप लिया है। धीरे-धीरे कुत्ता घर के सभी लोगों के संस्कारों पर छाता जा रहा है। सभी अब उससे स्नेह प्रदर्शित करने में ग्लानी महसूस नहीं करते। दादा-दादी निश्चिंत नहीं हैं। वर्तमान जब कुत्ते से आच्छादित होकर इतना भयावह हो गया है तो भविष्य के गर्भ में से न जाने क्या निकल आए। कुत्ते तक तो ठीक है। पर इसी गति से यदि संस्कारों का अवमूल्यन होता रहा तो भविष्य में गऊ माता का दर्जा गिरने लगेगा और पोते का पोता न जाने कौन-सा जानवर पालने लगेगा ! संस्कारों के अवमूल्यन का यह असर अभूतपूर्व है, जिसके चलते दादा-दादी को अपना "भूत" नहीं, बल्कि भविष्य आतंकित कर रहा है।

आज के परिदृश्य में दुनिया काफी तेजी से बदल रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी उन्नती हो रही है और इसी के साथ लोगों का रहन-सहन और उनके विचार और जीने के तरीके और जरूरतें बदल रहीं हैं। इसी के परिणामस्वरूप एक विशेष पीढ़ी के लोगों की धारणाएं दूसरी पीढी के लोगों से मेल नहीं खाती यानी अलग होती है और इसे ही जनरेशन गैप या पीढ़ी अंतराल कहा जाता है।

यदि हमारे विचार दूसरे व्यक्ति से मेल नहीं खाते तो यह गलत नहीं है लेकिन यदि इस बात पर झगड़ा होता है तो इससे हमें बचने की कोशिश करनी चाहिए।

बड़ों का सम्मान करें और छोटों को प्यार, यही है, श्वान-सापेक्ष संस्कृति में जीने का उपाय।

*** ***** ***

दीपक बनकर.....

---श्री मुकुल क्षेत्री
पुत्र
श्री नरबहादुर, प्रवर श्रेणी लिपिक

हम न अंधेरे से डरते हैं, लड़ते हैं, तूफान से।
काली रातें जगमग करते दीपक बन कर शान से॥

हमें नहीं रुकना है चाहे मंजिल किनती दूर हो।
हार न हम मानेंगे चाहे हिम्मत चकनाचूर हो॥

सोये हैं जो उन्हें जगाते अपने कलरव गान से।
नन्हे-मुन्ने हैं तो क्या हम हिम्मत वाले वीर हैं॥

चाहे जैसी मुश्किल हो हम होते नहीं अधीर हैं।
स्वर्ग धरा पर ले आयेंगे हम अपनी मुस्कान से॥

असत्य पर सत्य की घोषणा करते हैं विजयगान से।
काली रातों में जलते हैं दीपक बनकर शान से॥

*** ***** ***

एक नायक बनो और सदैव खुद से कहो मुझे कोई डर नहीं है जैसा मैं सोच सकता हूं वैसा जीवन में जी भी सकता हूँ।

- स्वामी विवेकानंद

कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाले कुछ लैटिन शब्दों के हिन्दी समानार्थ

---श्री जी.प्रेम कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

Ad hoc - तदर्थ
Ad infinitum - निरवधि
Ad interim - अंतः कालीन/अस्थायी
Ad valorem - मूल्यानुसार
Anti dated - पूर्व दिनांकित
Audi alteram partem - दूसरे पक्ष को भी सुनो
Bonafide - सद्भाव से/वास्तविक, असली
Cum - (व), और, एवं
Data - आधार, तथ्य, आँकड़े
De facto - वस्तुतः, यथार्थ
Dejure - विधितः
Ditto - यथोपरि, जैसे ऊपर
Eratta - शुद्धि-पत्र
En route - मार्ग/ रास्ते में/ अनुमार्ग
Ex cadre - संवर्ग बाह्य
Ex gratia - अनुग्रहपूर्वक
Ex officio - पदेन
Ex parte - एकपक्षीय
Expost facto - कार्योत्तर, भूतलक्षी प्रभाव
Ibid (Ibidem) - वहीं/उसी स्थान पर
In absentia - अनुपस्थिति में
In lieu of - के बदले में/ के स्थान पर
Infra - निम्न/नीचे/ अधो
In toto - संपूर्णतः या पूरी तरह से
Injuria sine damno - बिना हानि के क्षति
Inter alia - अन्य बातों के साथ/ साथ-साथ
Inter se - परस्पर/ आपस में
Ipso facto - यथातथ्यतः/ इसी बात से
Liaison - संपर्क
Locus standi - सुनवाई का अधिकार/ सुने जाने का अधिकार
Malafide - कदाशय, बदनीयत
Mesne profit - अंतः कालीन लाभ
Modus operandi - कार्यप्रणाली
Mutatis mutandies - यथावश्यक परिवर्तन सहित
Nota Bene (N.B) - विशेष ध्यान दीजिए
Onus - भार/दायित्व
Onus operandi - सिद्धिभार
Par excellence - श्रेष्ठ/उत्कृष्ट
Per annum - प्रतिवर्ष/ वार्षिक
Per Capita - व्यक्तिवार/ प्रति व्यक्ति
Percent - प्रतिशत/ प्रति सैकड़ा
Per mensem - मासिक, प्रतिमास
Per se - स्वतः
Post script (P.S.) - पुनश्च
Prime facie - प्रथम दृष्ट्या/प्रत्यक्षतः/ प्रथम दृष्टि में
Proforma - प्रारूप, प्रपत्र, प्रोफार्मा
Pro rata - अनुपाततः, यथानुपात
Pro tanto - उस सीमा तक
Proviso - परन्तुक / शर्त
Proximo - आगामी मास का
Proxy - परोक्षी/ प्रतिपत्री/ प्रतिपत्र
Quantum - प्रमात्रा/ क्वांटम
Quasi judicial - न्यायिक / अर्धन्य
Quorum - कोरम
Resume - सारांश/ सारवृत्त
Sine die - अनिश्चित काल के लिए
Sine Qua non - अनिवर्य शर्त/ अपरिहार्य शर्त
Status Quo - यथापूर्व स्थिति
Sub-judice - न्यायाधीन

Tenure - अवधि/ कार्यकाल/पट्टा/ भूधृति
Ultimo - गत मास का
Ultra vires - शक्ति बाह्य
Veto - निषेधाधिकार, वीटो
Vice versa - प्रतिलोमतः
Visa-a-vis - आमने-सामने, सम्मुखीन
Writ - रिट, आदेश
Viva voce - मौखिक परीक्षा
Verbatim - शब्दशः

(संग्रह)

दुनिया में चाहे जितने भी विचार हो उनमे से बस एक ही जीवित रहेगा और वो है सच। और सच कभी ना ख़त्म होने वाला विचार है।

हम जो करते हैं और हम जो कर सकते हैं, इसके बीच का अंतर दुनिया की ज्यादातर समस्याओं के समाधान के लिए पर्याप्त होगा।

महात्मा गांधी

किसी भी एक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है:

1. उदास व दुखी ना होना
2. अपने कर्तव्य के पालन करने की क्षमता
3. कठिनाइयों का बलपूर्वक सामना करने की क्षमता

गोस्वामी तुलसीदास

जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान !

--- श्रीमती पी.के.प्रतिभा
कार्यालय अधीक्षक

भारत माँ के भाल की बिन्दी, बन कर चमक रही है हिन्दी ।
संस्कृत है भाषाओं की जननी, हिन्दी उनकी ज्येष्ठ आर्याणी ॥
विपुल जन-समूह की वाणी, जन-मानस की हिन्दी राणी ।
हिन्दी वाणी अति सुहावनी, ध्वनि इसकी है लुभावनी ॥
पढ़ने-लिखने में मनभावनी, सरल-सरस-सुगम सुपावनी ।
भारत माँ के माँग की रोली, हिन्द देश की प्यारी बोली ॥
बहुधर्मी में धर्म-निरपेक्षता, अनेक राज्य हैं एक राष्ट्रीयता ।
संविधान ने महत्व जाना, राजभाषा हिन्दी को माना ॥
बन भारत के ललाट की बिन्दी, जगमग-जगमग करती है हिन्दी ।
जय जय मेरा भारत महान, जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान ॥

*** ***** ***

आकांक्षा, अज्ञानता, और असमानता यह बंधन की त्रिमूर्तियां हैं।

- स्वामी विवेकानंद

भारत की लिपि : देवनागरी

---विभिन्न स्रोतों से साभार

देवनागरी लिपि के नामकरण के विषय में अनेक मत प्रचलित हैं। जैसे, देवताओं की प्रतिमाओं के बनने से पूर्व, उनके सांकेतिक चिह्न, जिन्हें देवनागर कहते हैं, पूजे जाते थे। कालान्तर में यही देव-चिह्न लिपि-चिह्न बन गए और उन पर आधारित लिपि; देवनागरी लिपि के नाम से पुकारी जाने लगी। कुछ लोगों का मत है कि प्राचीनकाल में पाटलीपुत्र को "नगर" एवँ पाटलीपुत्र के सम्राट चन्द्रगुप्त को "देव" कहा जाता था। इन दोनों के नाम पर नागरी लिपि को देवनागरी कहकर पुकारा जाने लगा। कुछ लोग नागर का संबंध गुजरात के "नागर ब्राह्मणों" से जोड़ते हैं। उनका कहना है कि नागर ब्राह्मणों से प्रचलित होने के कारण ही इनका नाम नागरी पड़ा। एक अन्य मतानुसार तांत्रिक ग्रंथों में बने कुछ चिह्नों को, "देवनागर" कहा जाता था। नागरी के अनेक अक्षर इन चिह्नों से मिलते-जुलते लगते थे, इसलिए इस लिपि को देवनागरी कहा जाने लगा। डॉ.धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार, मध्ययुग की एक स्थापना शैली का नाम "नागर" था, जिसकी आकृतियाँ चौकोर होती थीं। नागरी लिपि के अधिकांश अक्षर चौकोर हैं। इसी साम्य के आधार पर इसे "नागर" या "नागरिक" कहा गया। इसके बाद सम्मानसूचक "देव" शब्द जुड़ जाने से इनका नाम देवनागरी हो गया। कुछ विद्वानों का मानना है कि इस लिपि का प्रचार "देवनागर" (काशी)में हुआ, इसलिए इसका नाम देवनागरी पड़ा। नगरों में प्रचलित होने के कारण यह लिपि "नागरी लिपि" के नाम से पुकारी गई, यह भी मान्यता है। कुछ विद्वान "नागलिपि" के कारण नागरी नाम स्वीकारते हैं।

नागरी या देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मि लिपि की उत्तरी शैली में हुआ है। इस लिप से गुजराती, महाजनी, गौड़ी, कैथी, मैथिली, बंगला आदि लिपियों का विकास हुआ है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि यह विश्व की प्राचीनतम लिपियों में से एक है। इस लिपि से संसार की अनेक प्रमुख लिपियों का विकास हुआ है। यह लिपि, हमारे देश की श्रेष्ठ व्यापक, राष्ट्रीय एवँ वैज्ञानिक लिपि है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर विचार करने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए कि एक वैज्ञानिक लिपि में या आदर्श लिपि में निम्नलिखित गुण होना चाहिए--

- आदर्श लिपि के लिए आवश्यक है कि उसमें ध्वनि और लिपि में साम्य पाया जाए अर्थात् जो बोली जाए, वही लिखी जाए और जो लिखी जाए, वही बोली जाए।
- एक ध्वनि के लिए ही लिपि-चिह्न हो अर्थात् ध्वनि और उसके संकेतों में निश्चितता हो ।
- आदर्श लिपि में किसी भाषा की समग्र ध्वनियों को अँकित करने की पूर्ण क्षमता होनी चाहिए।

- लिपि का सुपाठ्य और संदेहरहित होना भी आवश्यक है। एक संकेत में दूसरे का भ्रम नहीं होना चाहिए।
- सौन्दर्य भी एक महत्वपूर्ण गुण है, जिसका आदर्श लिपि में होना अपेक्षित है।
- यांत्रिक सौन्दर्य भी वैज्ञानिक लिपि के लिए आवश्यक है, जिससे टंकण या मुद्रण में सुविधा है।
- आदर्श लिपि के लिए यह भी अनिवार्य है कि वह शीघ्रता से लिखी जा सके ।

उपर्युक्त सभी गुण देवनागरी में मिलते हैं। इसमें ध्वनि एवँ लिपि में पूर्ण साम्य है अर्थात् जो बोली जाती है, वही लिखी जाती है। हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनको रोमन में लिखने में अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। जैसे- "पढ़ना" और "पड़ना", "बढ़ा" और "बड़ा" । इन शब्द-युग्मों के अर्थ अलग-अलग हैं। रोमन में लिखने से इनका अंतर समाप्त हो जाएगा। इसका उच्चारण भी भिन्न तरीके से होगा। अंग्रेजी में "राम" का "रामा" तथा "ब्रह्म" का "ब्रह्मा" हो जाता है।

भारत में लगभग 12 लिपियाँ प्रयोग में आती हैं। लिपिभेद से भिन्नता बढ़ती है। अतएव, देश में एकता की स्थापना की दृष्टि से आचार्य विनोबा जी ने एक सहलिपि की आवश्यकता का अनुभव किया और देश की सभी भाषाओं को अपनी लिपि के साथ-साथ नागरी लिपि में भी लिखने का आग्रह किया। भारतीय संविधान में भी राष्ट्र लिपि के रूप में इसे मान्यता प्राप्त है।

नागरी लिपि का प्रचार भौगोलिक दृष्टि से समस्त हिन्दी प्रदेश में तथा मालवा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र में है और प्राचीनता की दृष्टि से इनका सम्बन्ध भारत की सबसे पूरानी ब्राह्मि लिपि से है। नागरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हम जो लिखते हैं, वही पढ़ते भी है। लिखा हुआ निश्चयात्मक ढंग से पढ़ा जाना किसी भी लिपि का सर्वश्रेष्ठ गुण होता है और वह नागरी में सर्वाधिक मात्रा में है।

जिस प्रकार किसी भी बहुभाषी राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा के रूप में कोई एक भाषा अपेक्षित है, उसी प्रकार बहुलिपि वाले राष्ट्र के लिए संपर्क-लिपि के रूप में एक लिपि भी अत्यंत आवश्यक है। भारत एक बहुलिपियों वाला राष्ट्र है, यहाँ दर्जनों लिपियों का किसी-न-किसी रूप में व्यवहार होता है, यथा ब्राह्मी, खरोष्ठी, गुप्त, कुटिल, देवनागरी, शारदा, बंगला, तेलुगु, कन्नड, ग्रंथ, तमिल, मलयालम, गुरुमुखी, गुजराती, मैथिली, कैथी, महाजनी, उर्दू तथा रोमन लिपि आदि।

भाषा; मानव समाज के लिए एक ऐसा बहुमूल्य साधन है, जिसके माध्यम से प्रत्येक मनुष्य अपने मन के विचारों को दूसरों के सम्मुख भली-भाँति अभिव्यक्त कर सकता है। वस्तुतः भाषा ऐसी अलौकिक देवी शक्ति है, जो मानव को मनुष्यता प्रदान करती है और उसका स्थान तथा पद अन्य प्राणियों से ऊपर उठा

सकती है। मानव के मनोभावों को कथित और लिखित रूप में व्यक्त करने का साधन भाषा है, तो लेखन-क्रिया के प्रयोग में लाने के लिए लिपि का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा के बिना लिपि का कोई अस्तित्व नहीं और लिपि के बिना भाषा की स्पष्ट अभिव्यक्ति भी संभव नहीं। शब्द रूपी आत्मा का शरीर, लिपि है। अतः हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि भाषा और लिपि का घनिष्ठ संबंध है।

भारत की अधिकांश मुख्य लिपियों का मूलाधार ब्राह्मि लिपि है, जो कि भारत की सबसे प्राचीन लिपि मानी जाती है। आज संस्कृत, हिन्दी, मराठी, नेपाली आदि नागरी में लिखी जाती हैं, जबकि बंगला, गुजराती, अवधि, मागधी, कोंकिणी, डोंगरी, सिन्धी की लिपि भी देवनागरी से अटूट संबंध रखती हैं। देवनागरी एक वैज्ञानिक भारतीय लिपि है। जहाँ तक अन्य भाषाओं का संबंध है, मराठी की लिपि तो नागरी है ही, बंगला, उड़िया, असमिया, गुरुमुखी, गुजराती आदि लिपियाँ भी नागरी के अत्यन्त निकट हैं। यदि इन भाषाओं को नागरी लिपि में लिखा जाए, तो कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। नागरी लिपि भारत की अन्य भाषाओं द्वारा भी अपनायी जा सकती है। इसका प्रमुख कारण है कि संस्कृत भाषा जो भारतीय भाषाओं की जननी है, की लिपि भी नागरी रही है ।

*** ***** ***

1. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है: महात्मा गांधी

2. मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता: आचार्य विनोबा भावे

3. जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता: डॉ. राजेंद्र प्रसाद

4. हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है: राहुल सांकृत्यायन

5. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है: समित्रानंदन पंत

6. 'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है': लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

7. हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी: सी. राजगोपालाचारी

8. प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती: सुभाषचंद्र बोस

कोविड-कुछ सकारात्मक विचार

---श्री अरुणकुमार टी.एस.
अधिकारी सर्वेक्षक

पिछले डेढ़ साल से कोविड महामारी देश में आतंक का राज कर रही है। इस दुनिया में बहुत सारे लोगों को अपने-अपने माता, पिता, भाई, बहन और अन्य रिश्तेदारों को खोना पड़ा। अब भी यह महामारी अपने देश में कहर बरपा रही है।

यहां मैं कुछ सकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालना चाहता हूँ जो कोविड ने हमें सिखाया हैं। मुझे लगता है कि कोविड ने एक बार फिर से परिवार की संकल्पना को वापस ला दिया। पहले लोग अपनी नौकरी, सामजिक प्रतिबद्धताओं, दोस्तों के साथ पार्टी करने, सप्ताहांत सैर आदि के कारण बहुत व्यस्त थे। लेकिन कोविड के कारण लोग अपने घर की चार दीवारों के भीतर रहने को मजबूर हुए, जिससे परिवार में निकटता एक बार फिर वापस आ गई।

कोविड ने हमें यह भी सिखाया कि त्यौहारों और अन्य पारिवारिक अनुष्ठानों को न्यूनतम खर्च के साथ कैसे संचालित किया जाए। अचानक लोगों ने महसूस किया कि भारी खर्च से बचकर कम से कम रिश्तेदारों के साथ शादी का आयोजन कैसे कर सकते हैं। बेटे और बेटियों को माता-पिता से बात करने का समय मिला। अचानक बच्चों को यह महसूस होने लगा कि घर का खाना केएफसी, मैकडोनाल्ड्स और अन्य फास्टफूड से हज़ार गुना बेहतर है।

लोगों ने न्यूनतम कपड़ों, न्यूनतम अभिलाषाओं के साथ जीना सीखा। सोशल मीडिया प्लैटफार्म के माध्यम से मैंने जो मुख्य पहलू देखा है, उनमें से एक यह है कि लॉकडाउन अवधि के दौरान कई लोगों ने अपनी रचनात्मकता या अंतर्निहित प्रतिभा को सामने लाया है। मुझे ऐसे कई नए सितारे देखने को मिले जिन्होंने खुद को गायक, नर्तक या एक चित्रकार के रूप में साबित किया।

राजनेताओं ने सीखा कि वे बड़ी रैलियों या हड़ताल किए बिना लोगों के दिमाग में कैसे पहुँच सकते हैं। कोविड की वजह से वाहनों के यातायात को नियमित करने या नियंत्रित करने के कारण दुनिया में पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में भी मदद मिली। इससे देश में दुर्घटनाओं की संख्या को कम करने में भी मदद मिली। यदि हम देश में कोविड से पहले और कोविड के बाद होने वाली मौतों के आंकड़ों को लें तो यह स्पष्ट है कि कोविड के अलावा अन्य कारणों से होने

वाली मौतों की संख्या में काफी कमी आई है।

एक और महत्वपूर्ण बात जो कोविड ने हमें सिखाया है कि जब तक स्वास्थ्य संबंधी कोई आपात स्थिति नहीं है, तब तक अस्पताल जाने की कोई जरूरत नहीं है। कोविड से पहले लोगों को छोटी-छोटी स्वास्थ्य समस्याओं के लिए भी अस्पताल जाने की आदत थी। इस पर पूरी तरह से रोक लग गई है और लोग घरेलू दवाओं से ठीक होने लगे हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि यह है कि लोगों ने योग सीखना और अभ्यास करना शुरू कर दिया। इससे उन्हें तनाव और अन्य शारीरिक रोगों से राहत पाने में मदद मिली।

मैं निश्चित रूप से इस बात से सहमत हूँ कि कोविड महामारी ने कई क्षेत्रों में बहुत बुरा प्रभाव डाला है। कई लोगों की नौकरी चली गई, दिहाड़ी मजदूर परेशान हैं, कई छोटे उद्योग बंद हो गए हैं, बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा बुरी तरह प्रभावित हुई हैं और कर एवं राजस्व हानि के कारण सरकारी परियोजनाएं प्रभावित हुई हैं। लेकिन यह अपरिवर्तनीय है। हमें इस बीमारी के साथ जीना है।

कोविड के समय में लोग नकारात्मक पहलुओं के बारे में अधिक सुनते थे। उपरोक्त कुछ पंक्तियों के माध्यम से मैंने कोविड महामारी को एक अलग दृष्टिकोण से देखने की चेष्टा की है। मैंने कुछ सकारात्मक पहलुओं को लाने के बारे में सोचा जो मैंने महामारी के दौरान देखे हैं। मैं भगवतगीता की इन पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ कि "जो हुआ अच्छे के लिए हुआ और जो होने वाला है वह भी अच्छा ही होगा"।

*** ***** ***

आकांक्षा, अज्ञानता, और असमानता यह बंधन की त्रिमूर्तियां हैं।

- स्वामी विवेकानंद

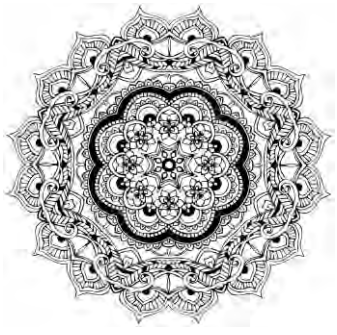

जनसंख्या नियंत्रण क्यों जरूरी

---श्री गौरव पटेल
अवर श्रेणी लिपिक

जनसंख्या की परिभाषा की अगर बात करें तो यह विभिन्न विषयों के आधार पर भिन्न-भिन्न हो सकती है, मसलन जीव-विज्ञान में "विशेष प्रजाति के अंतः जीव प्रजनन के संग्रह को जनसंख्या कहते है एवं समाजशास्त्र में इसे मनुष्यों का संग्रह कहते है।" सरल भाषा में जनसंख्या का आशय किसी देश के निश्चित भू-भाग में निवास करने वाले लोगों से है।

आधुनिक भारत में जनगणना की शुरुआत 1872 ई0 में हुई परन्तु प्रथम समकालीन जनगणना की शुरुआत 1881 ई0 में मानी गई। स्वतंत्र भारत में वर्ष 1951 ई0 में पहली बार जनगणना हुई और तब से प्रत्येक दस वर्ष के बाद जनगणना का कार्य संपन्न किया जाता है। इस प्रकार 2021 में जनगणना होनी चाहिए थी परन्तु कोरोना महामारी की वजह से इसको फिलहाल थोड़े समय के लिए टाला गया है। "जनगणना केवल व्यक्तियों मात्र की गणना नहीं अपितु यह सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आंकड़े उपलब्ध कराने का सबसे बड़ा स्रोत भी है।"

जनगणना के आकड़ों पर विचार करें तो 1911 से 1921 के दशक को छोड़कर जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है। आज भारत की कुल जनसंख्या 1.366 बिलियन है हम से आगे बस चीन देश है जिसकी कुल जनसंख्या 1.398 बिलियन है। भारत की जनसंख्या अगर इसी रफ्तार से बढ़ती रही तो 2050 से पहले ही चीन को छोड़कर हम विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश के नागरिक बन जायेंगे।

भारत जैसे एक विकासशील देश के लिए इतनी बड़ी आबादी का बोझ उठा पाना मुश्किल है और वो भी तब जब हमारा देश एक बड़ी आबादी को गरीबी से बाहर निकालने की कोशिश में लगा है। तथा हमारे देश में गरीब और अमीर के बीच की खाई दिन-ब-दिन बड़ती ही जा रही है।

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था उत्पादन, उपभोग और वितरण पर टिकी होती है, हमारा देश उत्पादन के मामले में तो आत्मनिर्भर हो रहा है परन्तु विशाल जनसंख्या के कारण उपभोग भी देश के लोग ही कर लेते हैं ऐसे में निर्यात से मिलने वाला लाभ देश को नहीं हो पाता। उल्टे हमें ही आवश्यक वस्तुओं का आयात करना पड़ता है, जिससे भुगतान संतुलन हमेशा ही गड़बडाया रहता है। अगर यही जनसंख्या सीमित

हो तो हम अधिशेष उत्पादन को निर्यात कर विदेशी मुद्रा अर्जित कर पाएंगे और भुगतान संतुलन हमारे पक्ष में रहेगा।

विकासशील देश के लिए इतनी बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने का संकट हमेशा रहता है जिस कारण बेरोजगारी की दर हमेशा अपने चरम पर रहती है। इसी के कारण समाज में असंतोष उत्पन्न होता है और चोरी, लूट और अन्य अपराध बढ़ जाते हैं तथा पर्यावरण में भी छेड़छाड़ की संभावना बनी रहती है। जनसंख्या अधिक होने की स्थिति में सरकार के ऊपर हमेशा दबाव रहता है कि सबको शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य बुनियादी सुविधायें कैसे दी जाए और इस बढ़ी हुई जनसंख्या का देश के विकास में कैसे उपयोग किया जा सके।

इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए देश के विकास के लिए जनसंख्या को नियंत्रित करना अति आवश्यक है। अगर किसी देश की जनसंख्या नियंत्रित हो तो उस देश को आत्मनिर्भर होने में ज्यादा वक्त नहीं लगता, सरकारी योजनाओं का लाभ टारगेटेड/लक्षित लोगों तक पहुँचता है और देश जल्दी से विकास कर जाता है।

जनसंख्या नियंत्रण की नीति को संप्रदायिक आधार पर नहीं देखना चाहिए। यह पूरे भारत के विकास और उत्थान के लिए जरूरी है। हमारे देश में राजनीति हमेशा से ही देश हित पर हावी रही है, और हर एक कार्य को धर्म या मजहब से जोड़ दिया जाता है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि किसी भी देश के पास एक सीमित मात्रा में ही संसाधन होते हैं। अगर इन सीमित संसाधनों का दोहन असीमित लोग करने लगेंगे तो वह कब तक बोझ झेल पायेगा। अंततः एक स्थिति ऐसी आयेगी जब यही जनसंख्या संसाधनों के दोहन के लिए एक-दूसरे के दुश्मन बन जायेंगे और समस्त मानव जाति का ही सर्वनाश कर बैठेंगे।

अतः इस देश को व देशवासियों को जनसंख्या नियंत्रण पर गंभीर रूप से विचार व इस दिशा में कार्य करना शुरू कर देना चाहिए वरना परिणाम बहुत ही भयावह होंगे।

"अनियंत्रित जनसंख्या के बोझ को धरती कब तक उठायेगी।

जाग उठो अब निशाचरों वरना कयामत एक दिन आयेगी॥

टूट पडेगी शासन बन कर वह न किसी को छोडेगी।

तुम करते रहना " तू-तू,मैं-मैं " वह चुन-चुन करके फोडेंगी॥"

*** ***** ***

आकांक्षा, अज्ञानता, और असमानता यह बंधन की त्रिमूर्तियां हैं।

- स्वामी विवेकानंद

स्वतंत्रता दिवस से जुड़े रोचक किस्से

--- श्रीमती बिजल तेवर,
अधिकारी सर्वेक्षक

1. 1940 के दशक में हो रहे जबरदस्त आंदोलन ब्रिटिश सरकार पर दबाव बना रहे थे और साथ ही दूसरे विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन खुद भी काफी कमजोर हो गया था, इसलिए 1947 में ब्रिटेन ने भारत को आजाद करने का फैसला किया ।
2. ब्रिटेन की लेबर पार्टी ने 1945 में हुए चुनाव में ये वादा किया था कि वो भारत और उसके अलावा दूसरी ब्रिटिश कॉलोनियों को मुक्त कर देंगी। जीत के बाद लेबर पार्टी के प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली(Clement Attlee) ने ये घोषणा कर दी कि जून 1948 तक भारत को पूर्ण स्वराज दे दिया जाएगा।
3. फरवरी 1947 में लार्ड माउंटबेटन को भारत के आखिरी वायसरॉय के पद पर नियुक्त किया था ताकि वो सत्ता के हस्तांतरण की प्रक्रिया करवा सकें । पहले आजादी 1948 में होनी थी लेकिन भारत में बढ़ रहे सांप्रदायिक तनाव के चलते उन्होंने आजादी को अगस्त,1947 में ही देने का फैसला किया ।
4. जून 1947 में लार्ड माउंटबेटन के साथ हुई मीटिंग में भारत की आजादी को लेकर दो बड़े फैसले हुएः पहला भारत के बंटवारे को लेकर जिसके तहत भारत को दो हिस्सों में बांटा गया और दूसरा कि सत्ता का हस्तांतरण 15 अगस्त,1947 को किया जाएगा । इसे "थर्ड जून माउंटबेटन प्लान (3rd June Mountbatten plan)" भी कहा जाता है।
5. भारत के आखिरी वायसरॉय लार्ड माउंटबेटन 15 अगस्त की तारीख को अपने लिए अच्छी मानते थे क्योंकि 15 अगस्त, 1945 में दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान की आर्मी ने उनकी फौज के आगे समर्पण किया था।
6. जब भारत 14 और 15 अगस्त की मध्यरात्रि में पूरा देश आजादी का जश्न मना रहा था, उस वक्त आजादी के आंदोलन के सबसे बड़े प्रतिनिधि महात्मा गांधी वहां मौजूद नहीं थे। महात्मा गांधी बंटवारे के फैसले से नाखुश थे और बंटवारे की वजह से हो रहे साम्प्रदायिक दंगों और तनाव को रोकने के लिए कलकत्ता

में अनशन कर रहे थे।

7. भारत देश की आजादी के जश्न के कार्यक्रम में सबसे पहले आजादी के लिए होने वाले शहीदों के लिए 2 मिनट का मौन रखा गया, जिसके बाद तीन वक्ताओं ने अपनी बात कही। सबसे पहले कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ.राजेंद्र प्रसाद ने सदन में अपनी बात कही। इसके बाद जवाहर लाल नेहरू ने मशहूर "नियति से मुलाकात" भाषण दिया ।
8. 14-15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि को आजादी मिलने के लगभग 20 मिनट बाद, भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और पहले राष्ट्रपति डॉ.राजेंद्र प्रसाद लार्ड माउंटबेटन के पास गए, उन्हें देश का पहला गवर्नर जनरल बनने का न्योता दिया । साथ ही पंडित नेहरू ने लार्ड माउंटबेटन को एक लिफाफे में पहली कैबिनेट मंत्रियों की सूची सौंपी । जब वो लिफाफा खोला गया तो वो खाली था, लेकिन शपथ ग्रहण समारोह तक गुम हुई सूची ढूंढ ली गई थी।
9. 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटेन ने भारत को सत्ता सौंपी थी । उस वक्त भी भारत ब्रिटेन के राजा किंग जॉर्ज 6 के अधीन संवैधानिक राज्य बना था। लेकिन 26 जनवरी,1950 को अपना संविधान लागू करने के साथ ही भारत ने ब्रिटिश साम्राज्य को पूर्णतः खत्म कर खुद को गणराज्य घोषित कर दिया था ।
10. भारत का झंडा पहली बार 7 अगस्त, 1906 को कलकत्ता के Parsee Bagan Square में फहराया गया था। उस वक्त झंडे के सबसे ऊपर लाल पट्टी थी जिस पर 8 कमल थे । नीचे हरी पट्टी पर बाई तरफ सफेद सूरज था और दाई तरफ चांद और तारा बना था।
11. भारत के तिरंगे को 1921 में पिंगली वैंकय्या (Pingali Venkayya) ने बनाया था । वो झंडा उन्होंने दो रंग, लाल और हरे से बनाया था, जो देश के दो सबसे बड़े समुदाय के प्रतीक थे, बाद में लाल रंग को बदल कर केसरी कर दिया गया था । गांधीजी की सलाह पर झंडे के बीच में सफेद रंग की पट्टी डाली गई। सफेद पट्टी बाकी सभी समुदायों का प्रतीक थी, साथ ही गांधीजी ने चरखे को भी डालने को कहा जो कि देश की तरक्की का प्रतीक हो।
12. 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा में भारत के झंडे को लेकर संविधान सभा में प्रस्ताव पारित किया गया था। जिसके अनुसार तिरंगे के किसी भी रंग को किसी भी समुदाय के साथ ना जोड़ा जाए । साथ ही चरखे की जगह अशोक चक्र को रखा गया क्योंकि वो धर्म और शासन का प्रतीक था ।
13. भारत की आजादी के बाद पुर्तगाल ने अपने संविधान में संशोधन करके गोवा को पुर्तगाल

का हिस्सा घोषित कर दिया था। 19 दिसंबर, 1961 को भारतीय फौज ने गोवा पर कब्जा कर उसे भारत का हिस्सा बनाया ।

14. भारत देश का संस्कृत में नाम है भारत गणराज्य। इसलिए इसे भारत कहते हैं । इंडिया शब्द इंडस नदी से आया जहां हमारे देश की पहली सिंधु घाटी की सभ्यता (Indus Valley Civilization) बसी थी। सिंधु घाटी की सभ्यता दुनिया की सबसे पहली शहरी सभ्यताओं में से एक है।
15. 3 जून, 1947 के भारत देश के विभाजन के फैसले के बाद डेक्कन हेरल्ड अखबार ने 4 जून, 1947 का अविभाजित भारत का नक्शा छापा था, जिसमें भारत का किस तरह से बंटवारा हो सकता है उसे दिखाया गया था, इसके साथ ही आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने देश को संबोधित किया था।
16. 1947 में एक डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत 1 रुपया थी और सोने का भाव 88 रुपए 62 पैसे प्रति 10 ग्राम था ।
17. 15 अगस्त, 1947 को भारत की पहली कैबिनेट ने शपथ ली थी । इस कैबिनेट में 5 अलग-अलग धर्मों से आए 13 मंत्री थे जिसमें एक महिला भी थी ।
18. पाकिस्तान का स्वतंत्रता दिवस भी पहले 15 अगस्त ही रखा गया था। यह अलग बात है कि 14 अगस्त को रमजान का 27 वां दिन था, जिसे पवित्र दिन माना जाता है। इसी कारण पाकिस्तान ने अपना आजादी का दिन15 अगस्त के बजाय 14 अगस्त को चुना।
19. 15 अगस्त, 1854 को ईस्ट इंडिया रेलवे ने कलकत्ता (आज का कोलकाता) से हुगली के लिए पहली यात्री ट्रेन चलाई गई थी। इसका संचालन साल 1855 से शुरू कर दिया गया था।

------विभिन्न स्रोतों से साभार

हम जो कुछ भी हैं वो हमने आज तक क्या सोचा इस बात का परिणाम है, यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है. यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो उसकी परछाई की तरह ख़ुशी उसका साथ कभी नहीं छोडती .

भगवान गौतम बुद्ध

जरा महसूस कर लेना कभी.....

---- श्री प्रमोद एम पराते
अधिकारी सर्वेक्षक

गुनगुनी धूप सी,
उन रिश्तों की गर्माहट को
जिनमें पकती थीं
कुछ मीठी-कड़वी यादें
सिंकते थे कितने ही
नए रिश्तों की नींव
कई रिश्ते बन जाते थे
बस मन ही मन के
न कोई नाम होता,
न होता कोई परिचय
फिर भी मीठी शहद सी
होती थीं अनोखी, मधुर
रिश्तों की यही
अनसुलझी अबूझ पहेली
तानाबाना स्मृतियों के,
दिल में बुन जाती हैं
अकेला जब होता मन,
झाँकती हैं दिल में बरबस
कहती हैं पा लेना ही नहीं,
कभी छूटने में भी सुख है...

***

जीवन का रास्ता स्वयं बना बनाया नहीं मिलता इसे बनाना पड़ता है जिसने जैसा मार्ग बनाया उसे वैसी ही मंजिल मिलती है।
- स्वामी विवेकानंद

अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रतिभा संपन्न बच्चों की उपलब्धियां

श्री नर बहादुर, प्रवर श्रेणी लिपिक की पुत्री कुमारी भावना क्षेत्री की निम्नलिखित सराहनीय उपलब्धियां हैं।

1 नौ वर्ष की उम्र से ही हॉकी खेलना प्रारंभ किया और SGFI/केंद्रीय विद्यालय संघटन की National Junior level हॉकी टीम में तीन बार चयनित होकर National Hockey events में भाग लिया है ।

2 दो बार केंद्रीय विद्यालय संगठन की National Senior level हॉकी टीम में तीन बार चयनित होकर National Hockey events में भाग लिया है ।

3 दो बार तेलंगाणा राज्य की हॉकी टीम में चयनित होकर खेला है।

4 "खेलो इण्डिया खेलो" में भाग लिया है।

5 पढ़ाई में भी इनकी प्रशंसनीय उपलबिध है, दसवीं में 9.6 ग्रेड में उत्तीर्ण है।

6 24th HITEC CITY KIT for MARATHAN भी प्राप्त किया है ।

***

लगातार अच्छे विचार सोचते रहना ही बुरे विचारों को दबाने का एकमात्र तरीका यही है।

- स्वामी विवेकानंद

जन-जन का यही है नारा,
टीके से कोरोना मुक्त हो,
भारत हमारा।

खुद डरे नहीं,
और न ही दूसरों को डराए,
कोरोना वायरस के प्रति,
लोगो को जागरूक बनाये।

सुरक्षा ही सर्वोपरि है।

याद रखें

सुरक्षा जीवन का अर्थ है,
सुरक्षा के बिना, सब व्यर्थ है।